وَمَآ أُبَرِّئُ نَفۡسِيٓۚ إِنَّ ٱلنَّفۡسَ لَأَمَّارَةُۢ بِٱلسُّوٓءِ إِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّيٓۚ إِنَّ رَبِّي غَفُورٞ رَّحِيمٞ (53)

५३. और मैं अपने मन की पाकीजगी का बयान नहीं करती, बेशक मन तो बुराई की प्रेरणा देने वाला ही है,[1] लेकिन यह कि मेरा रब ही अपना रहम करे,[2] बेशक (निश्चय ही) मेरा रब बख़्शने वाला रहम करने वाला है।

وَقَالَ ٱلۡمَلِكُ ٱئۡتُونِي بِهِۦٓ أَسۡتَخۡلِصۡهُ لِنَفۡسِيۖ فَلَمَّا كَلَّمَهُۥ قَالَ إِنَّكَ ٱلۡيَوۡمَ لَدَيۡنَا مَكِينٌ أَمِينٞ (54)

५४. और राजा ने कहा उसे मेरे सामने लाओ कि मैं उसे अपने निजी कामों के लिये तैनात कर लूँ, फिर जब उस से बातचीत करने लगा तो कहने लगा कि आप हमारे यहाँ आज से बाइज़्ज़त और अमानतदार हैं।

قَالَ ٱجۡعَلۡنِي عَلَىٰ خَزَآئِنِ ٱلۡأَرۡضِۖ إِنِّي حَفِيظٌ عَلِيمٞ (55)

५५. (यूसुफ़ ने) कहा कि आप मुझे देश के ख़ज़ाने पर तैनात कर दीजिये[3] मैं मुहाफ़िज़ और जानने वाला हूँ।

وَكَذَٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي ٱلۡأَرۡضِ يَتَبَوَّأُ مِنۡهَا حَيۡثُ يَشَآءُۚ نُصِيبُ بِرَحۡمَتِنَا مَن نَّشَآءُۖ وَلَا نُضِيعُ أَجۡرَ ٱلۡمُحۡسِنِينَ (56)

५६. और इस तरह हम ने यूसुफ़ को देश की बागडोर दे दी कि वह जहाँ चाहे रहे-सहे, हम जिसे चाहें अपनी रहमत पहुँचा देते हैं, और हम नेकी करने वालों के अमलों का फल बरबाद नहीं करते।

وَلَأَجۡرُ ٱلۡأٓخِرَةِ خَيۡرٞ لِّلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَكَانُواْ يَتَّقُونَ (57)

५७. और बेशक ईमानदारों और परहेज़गारों का आख़िरत का बदला बहुत अच्छा है।

---

[1] यह उस ने अपनी ग़लती की वजह बताई है कि इंसान का मन ही ऐसा है कि उसे बुराई के लिये उभारता और उकसाता है।

[2] मन के छल से वही महफ़ूज़ रहता है जिस पर अल्लाह तआला की रहमत हो, जिस तरह कि हज़रत यूसुफ़ को अल्लाह तआला ने बचा लिया।

[3] خزائن (ख़ज़ाएन) बहुवचन (जमा) है خزانة (ख़ज़ाना) का। ख़ज़ाना का मतलब है 'कोष' यानी ऐसी जगह को कहते हैं जहाँ चीज़ें हिफ़ाज़त से रखी जाती हैं, धरती के ख़ज़ाने से मुराद वे भण्डार हैं जहाँ अनाज जमा किया जाता था, इसकी व्यवस्था (तदबीर) अपने हाथ में लेने की इच्छा इसलिये ज़ाहिर की कि क़रीब मुस्तक़बिल में (ख़्वाब की ताबीर को देखते हुए) जो सूखे के साल आने वाले थे, उस से निपटने के लिये ख़ास इन्तेज़ाम किये जा सकें और अनाज की काफ़ी तादाद महफ़ूज़ रखी जा सके।

وَجَآءَ اِخْوَةُ يُوْسُفَ فَدَخَلُوْا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ (58)

५८. और युसुफ़ के भाई आये और यूसुफ़ के पास गये तो उस ने उन्हें पहचान लिया और उन्होंने उसे नहीं पहचाना ।[1]

وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ قَالَ ائْتُوْنِيْ بِاَخٍ لَّكُمْ مِّنْ اَبِيْكُمْ ۚ اَلَا تَرَوْنَ اَنِّيْٓ اُوْفِي الْكَيْلَ وَاَنَا خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ (59)

५९. और जब उनका सामान तैयार करा दिया तो कहा कि तुम मेरे पास अपने उस भाई को लाना जो तुम्हारे बाप से है, क्या तुम ने नहीं देखा कि मैं नाप भी पूरा कर देता हूँ और मैं हूँ भी अच्छी तरह से मेहमान की इज़्ज़त करने वालों में।

فَاِنْ لَّمْ تَاْتُوْنِيْ بِهٖ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِنْدِيْ وَلَا تَقْرَبُوْنِ (60)

६०. लेकिन अगर तुम उसे मेरे पास लेकर न आये तो मेरी तरफ़ से तुम्हें कोई नाप नहीं मिलेगा बल्कि तुम मेरे क़रीब भी न आ सकोगे ।

قَالُوْا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ اَبَاهُ وَاِنَّا لَفٰعِلُوْنَ (61)

६१. उन्होंने कहा ठीक है हम उसके पिता से इस बारे में फुसलाकर पूरी कोशिश करेंगे ।

وَقَالَ لِفِتْيٰنِهِ اجْعَلُوْا بِضَاعَتَهُمْ فِيْ رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُوْنَهَآ اِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى اَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ (62)

६२. और अपने नौकरों से कहा कि[2] उनका माल उन्हीं की बोरियों में रख दो कि जब लौट कर अपने परिवार में जायेंगे और माल को पहचान लें, तो बहुत मुमकिन है कि यह फिर आयें ।

فَلَمَّا رَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَبِيْهِمْ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ فَاَرْسِلْ مَعَنَآ اَخَانَا نَكْتَلْ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ (63)

६३. जब ये लोग लौटकर अपने बाप के पास गये तो कहने लगे हम से तो अनाज का नाप रोक लिया गया, अब आप हमारे साथ भाई को भेजिये कि हम नाप भर कर लायें हम उसकी हिफ़ाज़त के ज़िम्मेदार हैं ।

---

[1] यह उस वक़्त का वाक़ेआ है जब ख़ुशहाली के सात साल ख़त्म होकर सूखा शुरू हो गया, जिस ने मिस्र देश के ज़्यादातर इलाक़े को पीड़ित कर दिया, यहाँ तक कि कनआन तक भी उसका असर पहुँचा, जहाँ हज़रत याक़ूब और हज़रत यूसुफ़ के भाई निवास करते थे । हज़रत यूसुफ़ ने इस से निपटने के लिये जो तदबीर की थी, वे कामयाब हुई और हर तरफ़ से लोग हज़रत यूसुफ़ से अनाज लेने के लिये आ रहे थे, हज़रत यूसुफ़ की प्रसिद्धि (शुहरत) कनआन तक भी पहुँची कि मिस्र का राजा इस तरह अनाज बिक्री कर रहा है, इसलिए पिता के हुक्म पर यूसुफ़ के भाई भी घर की पूँजी लेकर अनाज हासिल करने के लिये राजदरबार में पहुँचे, जहाँ हज़रत यूसुफ़ बैठे थे, जिन्हें ये भाई तो न पहचान सके, लेकिन यूसुफ़ ने अपने भाईयों को पहचान लिया ।

[2] فِتْيَان (फ़ित्यान) का मतलब है नौजवान, जिस से मुराद है नौकर, सेवक और दास, जो राजदरबार में तैनात थे ।

قَالَ هَلْ اٰمَنُكُمْ عَلَيْهِ اِلَّا كَمَآ اَمِنْتُكُمْ عَلٰٓى اَخِيْهِ مِنْ قَبْلُ ؕ فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا ۪ وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿64﴾

६४. (याकूब ने) कहा कि क्या मैं इस के बारे में तुम्हारा वैसे ही यक़ीन कर लूं जैसे इस से पहले उसके भाई के बारे में यक़ीन किया? बस अल्लाह तआला ही सब से बेहतर मुहाफ़िज़ है और वह सभी मेहरबानों से ज़्यादा मेहरबान है।

وَلَمَّا فَتَحُوْا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوْا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ اِلَيْهِمْ ؕ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا نَبْغِيْ ؕ هٰذِهٖ بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ اِلَيْنَا ۚ وَنَمِيْرُ اَهْلَنَا وَنَحْفَظُ اَخَانَا وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيْرٍ ؕ ذٰلِكَ كَيْلٌ يَّسِيْرٌ ﴿65﴾

६५. और जब उन्होंने अपना सामान खोला तो अपना माल मौजूद पाया जो उनकी तरफ़ लौटा दिया गया था, कहने लगे हमारे पिताजी! हमें दूसरा क्या चाहिये? यह हमारा माल हमें लौटा दिया गया है, और हम अपने परिवार के लिये अनाज ला देंगे और अपने भाई की सुरक्षा (हिफ़ाज़त) करेंगे और एक ऊँट का नाप ज़्यादा लायेंगे, यह नाप तो ज़्यादा आसान है।[1]

قَالَ لَنْ اُرْسِلَهٗ مَعَكُمْ حَتّٰى تُؤْتُوْنِ مَوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ لَتَاْتُنَّنِيْ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يُّحَاطَ بِكُمْ ۚ فَلَمَّآ اٰتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿66﴾

६६. (याकूब ने) कहा कि मैं तो उसे कभी तुम्हारे साथ न भेजूंगा जब तक तुम अल्लाह को बीच में रखकर मुझ से वादा करो कि तुम उसे मेरे पास पहुँचा दोगे, सिवाय इसके कि तुम सब क़ैदी बना लिये जाओ, जब उन्होंने पक्का वादा किया तो उन्होंने कहा कि हम जो कुछ कहते हैं अल्लाह उसका संरक्षक (निगहबान) है।

وَقَالَ يٰبَنِيَّ لَا تَدْخُلُوْا مِنْۢ بَابٍ وَّاحِدٍ وَّادْخُلُوْا مِنْ اَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ؕ وَمَآ اُغْنِيْ عَنْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ

६७. और (याकूब ने) कहा कि ऐ मेरे बच्चो! तुम सब एक दरवाज़े से न जाना, बल्कि कई दरवाज़ों से अलग-अलग तरह से दाख़िल होना,[2] मैं अल्लाह की तरफ़ से आयी हुई किसी चीज़ को तुम से टाल नहीं सकता, हुक्म सिर्फ़

---

[1] इसका एक मतलब तो यह है कि राजा के लिये एक ऊँट का वज़न कोई कठिन काम नहीं है, आसान है। दूसरा मतलब यह है कि ذلك का इशारा उस अनाज की तरफ़ है जो साथ लाये थे और يسير का मतलब थोड़ी तादाद है यानी हम जो अनाज लाये हैं वह थोड़ी तादाद में है, बिनयामीन के जाने से हमें ज़्यादा अनाज मिल जायेगा तो अच्छी ही बात है, हमारी ज़रूरत ज़्यादा अच्छी तरह से पूरी हो जायेगी।

[2] जब बिनयामीन सहित ग्यारह भाई मिस्र जाने लगे तो यह हिदायत की, क्योंकि एक ही बाप के ग्यारह बेटे जो शक्ल व सूरत में भी बेहतर हों, जब एक साथ एक ही जगह या एक साथ कही से गुज़रें तो आम तौर से उन्हें लोग ताज्जुब और हसद से देखते हैं और यही बात नज़र लगने का सबब बनती है, इसलिए उन्हें बुरी नज़र से बचने के लिये तरीक़ा के तौर में यह हिदायत दिया। नज़र लग जाना सच है, जैसाकि नबी करीम ﷺ से भी सहीह हदीस में साबित है।

مِنْ شَيْءٍ ۖ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ ۖ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۖ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ (67)

अल्लाह ही का चलता है, मेरा पूरा यक़ीन उसी पर है और हर भरोसा करने वाले को उसी पर भरोसा करना चाहिये।

وَلَمَّا دَخَلُوا مِنْ حَيْثُ أَمَرَهُمْ أَبُوهُمْ مَا كَانَ يُغْنِي عَنْهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا حَاجَةً فِي نَفْسِ يَعْقُوبَ قَضَاهَا ۚ وَإِنَّهُ لَذُو عِلْمٍ لِمَا عَلَّمْنَاهُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ (68)

६८. और जब वे उन्हीं रास्तों से जिनका हुक्म उन के बाप ने दिया था गये, कुछ न था कि अल्लाह ने जो बात मुक़र्रर कर दी है वह उन्हें उस से ज़रा भी बचा ले, हाँ याक़ूब के दिल में एक ख़्याल (पैदा हुआ) जिस को उस ने पूरा किया। बेशक वह हमारे सिखाये उस इल्म का आलिम था, लेकिन ज़्यादातर लोग नहीं जानते।

وَلَمَّا دَخَلُوا عَلَىٰ يُوسُفَ آوَىٰ إِلَيْهِ أَخَاهُ ۖ قَالَ إِنِّي أَنَا أَخُوكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ (69)

६९. और ये सब जब यूसुफ़ के पास पहुँच गये तो उस ने अपने भाई को अपने क़रीब बिठा लिया और कहा कि मैं तेरा भाई (यूसुफ़) हूँ, अब तक ये जो कुछ करते रहे उसकी कुछ फ़िक्र न कर।

فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِي رَحْلِ أَخِيهِ ثُمَّ أَذَّنَ مُؤَذِّنٌ أَيَّتُهَا الْعِيرُ إِنَّكُمْ لَسَارِقُونَ (70)

७०. फिर जब उनका सामान तैयार कर दिया तो अपने भाई के सामान में अपना पानी पीने का प्याला रख दिया, फिर एक पुकारने वाले ने पुकार कर कहा हे क़ाफ़िला वालों[1] ! तुम लोग तो चोर हो।

قَالُوا وَأَقْبَلُوا عَلَيْهِمْ مَاذَا تَفْقِدُونَ (71)

७१. उन्होंने उन की तरफ़ मुँह फेर कर कहा कि तुम्हारी क्या चीज़ खो गयी है ?

قَالُوا نَفْقِدُ صُوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَاءَ بِهِ حِمْلُ بَعِيرٍ وَأَنَا بِهِ زَعِيمٌ (72)

७२. जवाब दिया कि राजकीय प्याला खो गया है जो उसे ले आये उसे एक ऊँट के बोझ का अनाज मिलेगा, उस वादे का मैं ज़मानतदार हूँ।

قَالُوا تَاللَّهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كُنَّا سَارِقِينَ (73)

७३. उन्होंने कहा, अल्लाह की क़सम ! तुम्हें अच्छी तरह मालूम है कि हम देश में फ़साद पैदा करने के लिये नहीं आये और न हम चोर हैं।

---

[1] الْعِيرُ हकीकत में उन ऊँटों, गधों और खच्चर को कहा जाता है, जिन पर अनाज लाद कर ले जाया जाता है, यहाँ मुराद أصحابُ العير यानी सफ़र वाले मुसाफ़िर है।

قَالُوْا فَمَا جَزَآؤُهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ كٰذِبِيْنَ ﴿74﴾

७४. उन्होंने कहा अच्छा चोरी की क्या सजा है अगर तुम झूठ हो।

قَالُوْا جَزَآؤُهٗ مَنْ وُّجِدَ فِيْ رَحْلِهٖ فَهُوَ جَزَآؤُهٗ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿75﴾

७५. जवाब दिया कि इसकी सजा यही है कि जिस के सामान में से पाया जाये वही उसका बदला है, हम तो जालिमों को यही सजा दिया करते हैं।

فَبَدَاَ بِاَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَآءِ اَخِيْهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِّعَآءِ اَخِيْهِ ؕ كَذٰلِكَ كِدْنَا لِيُوْسُفَ ؕ مَا كَانَ لِيَاْخُذَ اَخَاهُ فِيْ دِيْنِ الْمَلِكِ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ وَفَوْقَ كُلِّ ذِيْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ ﴿76﴾

७६. फिर (यूसुफ़ ने) सामान में खोज शुरू कर दी अपने भाई के सामान की खोज से पहले, फिर उस ने पीने के प्याले को अपने भाई के सामान (थैले) से निकाला, हम ने यूसुफ़ के लिये इसी तरह यह तदबीर बनाई, उस राजा के क़ानून के ऐतबार से यह अपने भाई को न ले सकता था, लेकिन यह कि अल्लाह को मंजूर हो, हम जिसका चाहें मर्तबा बुलन्द कर दें, हर आलिम के ऊपर एक बड़ा आलिम मौजूद है।[1]

قَالُوْۤا اِنْ يَّسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ اَخٌ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ ۚ فَاَسَرَّهَا يُوْسُفُ فِيْ نَفْسِهٖ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ ۚ قَالَ اَنْتُمْ شَرٌّ مَّكَانًا ۚ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَصِفُوْنَ ﴿77﴾

७७. उन्होंने कहा कि अगर इस ने चोरी की तो (ताज्जुब की बात नहीं) इस का भाई भी पहले चोरी कर चुका है, यूसुफ़ ने यह बात अपने दिल में रख ली और उन के सामने बिल्कुल जाहिर नहीं किया, कहा कि तुम बुरी जगह में हो, और जो तुम बयान कर रहे हो उसे अल्लाह अच्छी तरह जानता है।

قَالُوْا يٰۤاَيُّهَا الْعَزِيْزُ اِنَّ لَهٗۤ اَبًا شَيْخًا كَبِيْرًا فَخُذْ اَحَدَنَا مَكَانَهٗ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿78﴾

७८. उन्होंने कहा कि हे मिस्री अजीज![2] इस के पिता बहुत बूढ़े इंसान हैं, आप इस के बदले हम में से किसी को ले लीजिये, हम देखते हैं कि आप बड़े नेक इंसान हैं।

---

[1] यानी हर आलिम से बढ़कर कोई न कोई आलिम होता है, इसलिये कोई आलिम इस घमन्ड में न रहे कि मैं ही अपने वक़्त का सब से बेहतर आलिम हूं, और कुछ मुफ़स्सिर कहते हैं कि इसका मतलब है कि हर आलिम के ऊपर सब कुछ जानने वाला अल्लाह तआला है।

[2] हजरत यूसुफ़ को मिस्री अजीज इसलिये कहा गया कि उस वक़्त सारे हक़ीक़ी अधिकार (हक़) हजरत यूसुफ़ के पास थे, राजा सिर्फ़ नाम के लिये ही बादशाह था।

قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اَنْ نَّاْخُذَ اِلَّا مَنْ وَّجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهٗۤ ۙ اِنَّاۤ اِذًا لَّظٰلِمُوْنَ ﴿79﴾

७९. (यूसुफ ने) कहा कि हम ने जिस के पास अपनी चीज पाई है उस के सिवाय दूसरों को बन्दी बनाने से अल्लाह की पनाह चाहते हैं, ऐसा करने से हम बेशक नाइंसाफी करने वाले हो जायेंगे।

فَلَمَّا اسْتَيْـَٔسُوْا مِنْهُ خَلَصُوْا نَجِيًّا ؕ قَالَ كَبِيْرُهُمْ اَلَمْ تَعْلَمُوْۤا اَنَّ اَبَاكُمْ قَدْ اَخَذَ عَلَيْكُمْ مَّوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ وَمِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُّمْ فِيْ يُوْسُفَ ۚ فَلَنْ اَبْرَحَ الْاَرْضَ حَتّٰى يَاْذَنَ لِيْۤ اَبِيْۤ اَوْ يَحْكُمَ اللّٰهُ لِيْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿80﴾

८०. जब यह उससे मायूस हो गये तो एकान्त में बैठकर राय-मशविरा करने लगे, उन में जो सब से बड़ा था उस ने कहा कि तुम्हें मालूम नहीं कि तुम्हारे पिता ने तुम से अल्लाह को बीच रखकर मजबूत अहद और वादा लिया है और इस से पहले तुम यूसुफ के बारे में गुनाह कर चुके हो, अब तो मैं इस धरती से न हटूंगा जब तक पिता ख़ुद मुझे इजाजत न दें, या अल्लाह तआला मेरे इस मसले का फैसला कर दे, वह सब से अच्छा हाकिम है।[1]

اِرْجِعُوْۤا اِلٰۤى اَبِيْكُمْ فَقُوْلُوْا يٰۤاَبَانَاۤ اِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ ۚ وَمَا شَهِدْنَاۤ اِلَّا بِمَا عَلِمْنَا وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حٰفِظِيْنَ ﴿81﴾

८१. तुम सब पिताजी की ख़िदमत में वापस जाओ और कहो कि हे पिताजी! आप के बेटे ने चोरी की और हम ने वही गवाही दी थी जो हम जानते थे, हम कुछ ग़ैब की हिफ़ाजत करने वाले तो न थे।

وَسْـَٔلِ الْقَرْيَةَ الَّتِيْ كُنَّا فِيْهَا وَالْعِيْرَ الَّتِيْۤ اَقْبَلْنَا فِيْهَا ؕ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿82﴾

८२. और आप उन नगरवासियों से पूछ लें, जहाँ हम थे और उन मुसाफ़िरों से भी पूछ लें जिन के साथ हम आये हैं, और बेशक हम पूरी तरह से सच्चे हैं।[2]

---

[1] अल्लाह मेरे मसले हल कर दे का मतलब है कि किसी तरह (मिस्री अजीज) बिनयामीन को छोड़ दे और मेरे साथ जाने की इजाजत दे दे, या यह मतलब है कि अल्लाह तआला मुझे इतनी ताक़त दे कि मैं बिनयामीन को तलवार या ताक़त से अजाद कराकर अपने साथ ले जाऊँ।

[2] नगर से मुराद मिस्र है जहाँ वे अनाज लेने गये थे, मतलब अहले मिस्र हैं। इसी तरह العِيْر, से मुराद اصحاب العير यानी सफ़र के साथी हैं, आप मिस्र जाकर अहले मिस्र से और उन मुसाफ़िरों से जिनके साथ सफ़र करके हम आये हैं, पूछ लें कि जो कुछ हम बयान कर रहे हैं वह सच है, इस में झूठ की कोई मिलावट नहीं है।

قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ؕ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ؕ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّاْتِيَنِىْ بِهِمْ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿83﴾

८३. (याक़ूब ने) कहा यह तो नहीं बल्कि तुम ने अपनी तरफ़ से बात बना ली, इसलिए सब्र ही बेहतर है, हो सकता है कि अल्लाह (तआला) उन सब को मेरे पास ही पहुँचा दे, वह ही आलिम और हिक्मत वाला है।

وَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰاَسَفٰى عَلٰى يُوْسُفَ وَابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيْمٌ ﴿84﴾

८४. और फिर उनसे मुँह फेर लिया और कहा हाय यूसुफ़![1] उनकी आँखें दुख-ग़म की वजह से सफ़ेद हो गयी थीं[2] और वह दुख-ग़म को बरदाश्त किये हुए थे।

قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا تَذْكُرُ يُوْسُفَ حَتّٰى تَكُوْنَ حَرَضًا اَوْ تَكُوْنَ مِنَ الْهٰلِكِيْنَ ﴿85﴾

८५. (बेटों ने) कहा अल्लाह की क़सम! आप हमेशा यूसुफ़ की याद में ही गुम रहेंगे यहाँ तक कि घुल जायेंगे या मर जायेंगे।

قَالَ اِنَّمَآ اَشْكُوْا بَثِّىْ وَحُزْنِىْٓ اِلَى اللّٰهِ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿86﴾

८६. उन्होंने कहा कि मैं तो अपनी मुसीबत और दुख की फ़रियाद अल्लाह से कर रहा हूँ, मुझे अल्लाह की तरफ़ से उन बातों का इल्म हासिल है जिन से तुम अंजान हो।[3]

يٰبَنِىَّ اذْهَبُوْا فَتَحَسَّسُوْا مِنْ يُّوْسُفَ وَاَخِيْهِ وَلَا تَايْـَٔسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يَايْـَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿87﴾

८७. मेरे प्यारे बेटो! तुम जाओ और यूसुफ़ और उस के भाई की भली तरह खोज करो, और अल्लाह की रहमत से मायूस न हो, बेशक अल्लाह की रहमत से वही मायूस होते हैं जो काफ़िर होते हैं।

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلَيْهِ قَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الْعَزِيْزُ مَسَّنَا وَاَهْلَنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجٰىةٍ فَاَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَجْزِى الْمُتَصَدِّقِيْنَ ﴿88﴾

८८. फिर ये लोग जब यूसुफ़ के पास पहुँचे तो कहने लगे कि हे अज़ीज़! हम और हमारा परिवार बहुत कठिनाई में है, हम थोड़े से हक़ीर माल लाये हैं, लेकिन आप हमें पूरे अनाज का नाप दे दीजिये, और हम पर सदक़ा कीजिये, अल्लाह तआला सदक़ा करने वालों को बदला देता है।

---

[1] यानी इस नये दुख ने यूसुफ़ की जुदाई के पुराने दुख को भी नया कर दिया।

[2] यानी आँखों की कालिमा (स्याही) दुख के सबब सफ़ेदी में बदल गयी थी।

[3] इस से मुराद तो वह ख़्वाब है जिस के बारे में उन्हें पूरा यक़ीन था कि ज़रूर साकार होगा और वे यूसुफ़ के सामने सज्दा रेज़ होंगे या उनका यह यक़ीन था कि यूसुफ़ ज़िन्दा हैं और उन से ज़िन्दगी में ज़रूर मिलन होगा।

قَالَ هَلْ عَلِمْتُم مَّا فَعَلْتُم بِيُوسُفَ وَأَخِيهِ إِذْ أَنتُمْ جَاهِلُونَ ﴿89﴾

८९. (यूसुफ़ ने) कहा जानते भी हो कि तुम ने यूसुफ़ और उस के भाई के साथ अपनी जिहालत में क्या-क्या किया ?

قَالُوا أَإِنَّكَ لَأَنتَ يُوسُفُ ۖ قَالَ أَنَا يُوسُفُ وَهَٰذَا أَخِي ۖ قَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا ۖ إِنَّهُ مَن يَتَّقِ وَيَصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿90﴾

९०. उन्होंने कहा क्या (हक़ीक़त में) तू ही यूसुफ़ है[1] जवाब दिया हाँ, मैं ही यूसुफ़ हूँ और यह मेरा भाई है, अल्लाह ने हम पर रहमत और मेहरबानी की। बात यह है कि जो भी परहेज़गारी और सब्र से रहे तो अल्लाह (तआला) किसी नेकी करने वाले का बदला बरबाद नहीं करता है।

قَالُوا تَاللَّهِ لَقَدْ آثَرَكَ اللَّهُ عَلَيْنَا وَإِن كُنَّا لَخَاطِئِينَ ﴿91﴾

९१. उन्होंने कहा, अल्लाह की क़सम कि अल्लाह ने तुझे हम पर फ़ज़ीलत अता की है और यह भी सच है कि हम गुनहगार हैं।

قَالَ لَا تَثْرِيبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ۖ يَغْفِرُ اللَّهُ لَكُمْ ۖ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ﴿92﴾

९२. जवाब दिया, आज तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं है, अल्लाह तुम्हें माफ़ करे वह सभी रहम करने वालों में सब से बड़ा रहम करने वाला है।

اذْهَبُوا بِقَمِيصِي هَٰذَا فَأَلْقُوهُ عَلَىٰ وَجْهِ أَبِي يَأْتِ بَصِيرًا وَأْتُونِي بِأَهْلِكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿93﴾

९३. मेरा यह कुर्ता तुम ले जाओ और मेरे पिता के मुँह पर डाल दो कि वह देखने लगें[2] और आ जायें, और अपने पूरे परिवार को मेरे पास ले आओ।

وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيرُ قَالَ أَبُوهُمْ إِنِّي لَأَجِدُ رِيحَ يُوسُفَ ۖ لَوْلَا أَن تُفَنِّدُونِ ﴿94﴾

९४. और जब ये क़ाफ़िला विदा हुआ तो उनके पिता ने कहा कि मुझे यूसुफ़ की ख़ुश्बू आ रही है, अगर तुम मुझे नाअक़्ल न समझो।[3]

---

[1] भाईयों ने जब मिस्री हाकिम के मुँह से उस यूसुफ़ का बयान सुना, जिसे उन्होंने बचपन में कनआन के एक अंधेरे कुऐं में फेंक दिया था तो वे ताज्जुब में पड़ गये और गौर से देखने के लिये मजबूर भी हो गये कि कहीं हम से मुख़ातिब राजा यूसुफ़ तो नहीं? वर्ना यूसुफ़ के हादसे का इल्म उन्हें किस तरह हो सकता है? इसलिए उन्होंने सवाल किया कि क्या तू यूसुफ़ ही तो नहीं?

[2] क़मीज़ के मुँह पर पड़ने से आँखों की रोशनी का आ जाना एक ताज्जुब और मोजिज़ा की शक्ल में था।

[3] उधर वह क़मीज़ लेकर मुसाफ़िर मिस्र से चले और इधर हज़रत याक़ूब को अल्लाह तआला की तरफ़ से मोजिज़ा की तरह हज़रत यूसुफ़ की ख़ुश्बू आने लग गयी, यह जैसे इस बात का एलान था कि अल्लाह के पैग़म्बर (ईशदूत) को भी, जब तक अल्लाह तआला की तरफ़ से

قَالُوْا تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَفِيْ ضَلٰلِكَ الْقَدِيْمِ ﴿95﴾

९५. वे कहने लगे कि अल्लाह की क़सम! आप तो अपनी उसी पुरानी ग़लती पर क़ायम हैं।

فَلَمَّآ اَنْ جَآءَ الْبَشِيْرُ اَلْقٰىهُ عَلٰى وَجْهِهٖ فَارْتَدَّ بَصِيْرًا ۚ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ ۚ اِنِّيْٓ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿96﴾

९६. जब ख़ुशख़बरी देने वाले ने पहुँचकर उन के मुँह पर कुर्ता डाला, उसी पल वह दोबारा देखने लगे। कहा कि क्या मैं तुम से न कहा करता था कि मैं अल्लाह की तरफ़ से वह बातें जानता हूँ जो तुम नहीं जानते

قَالُوْا يٰٓاَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَآ اِنَّا كُنَّا خٰطِـِٕيْنَ ﴿97﴾

९७. उन्होंने कहा हे पिता! आप हमारे गुनाहों की क्षमा-याचना (मग़फ़िरत की दुआ) कीजिये, बेशक हम गुनहगार हैं।

قَالَ سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّيْ ۗ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿98﴾

९८. कहा, अच्छा मैं जल्द ही तुम्हारे लिये अपने रब से माफ़ी की दुआ करूँगा,[1] वह बहुत बड़ा माफ़ करने वाला और बहुत रहम करने वाला है।

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰٓى اِلَيْهِ اَبَوَيْهِ وَقَالَ ادْخُلُوْا مِصْرَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ﴿99﴾

९९. जब ये पूरा परिवार यूसुफ़ के पास पहुँच गया तो यूसुफ़ ने अपने माँ-बाप को अपने क़रीब जगह दी, और कहा कि अल्लाह को मंज़ूर है तो आप सब सुख-शांति से मिस्र में आ जाओ।

وَرَفَعَ اَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوْا لَهٗ سُجَّدًا ۚ وَقَالَ يٰٓاَبَتِ هٰذَا تَاْوِيْلُ رُءْيَايَ مِنْ قَبْلُ ۫

१००. और अपने सिंहासन (तख़्त) पर अपने माँ-बाप को ऊँचे मुक़ाम पर बिठाया, और सब उस के सामने सज्दा में हो गये[2] और तब कहा

ज़रिया और ख़बर न पहुँचे तो पैग़म्बर अन्जान होता है, चाहे बेटा अपने नगर के किसी कुऐं में ही क्यों न हो? और जब अल्लाह इंतेज़ाम कर दे तो मिस्र जैसे दूर-दराज़ इलाक़े से भी बेटे की ख़ुश्बू आ जाती है।

[1] फ़ौरन दुआ न करके दुआ का वादा दिया, मक़सद यह था कि रात के आख़िरी पहर में जो अल्लाह के ख़ास बन्दों का अल्लाह की इबादत करने का ख़ास वक़्त होता है, अल्लाह से उनकी माफ़ी के लिये दुआ करूँगा।

[2] कुछ ने इसका तर्जुमा यह किया है कि इज़्ज़त-एहतेराम के लिये यूसुफ़ के सामने झुक गये, लेकिन وَخَرُّوا لَهُ سُجَّدًا के लफ़्ज़ बताते हैं कि वे धरती पर यूसुफ़ के सामने माथा रख दिये। यह सज्दा माथा टेकने के मानों में है, फिर भी यह सज्दा एहतेराम के लिये है इबादत के तौर पर नहीं, और लायके एहतेराम सज्दा हज़रत याक़ूब की शरीअत में जायेज़ था, इस्लाम में शिर्क (मिश्रण) को रोकने के लिये ऐसे ऐहतराम के लिए सज्दा करना नाजायेज़ कर दिया गया, और

قَدْ جَعَلَهَا رَبِّيْ حَقًّا ۖ وَقَدْ أَحْسَنَ بِيْ إِذْ أَخْرَجَنِيْ مِنَ السِّجْنِ وَجَآءَ بِكُمْ مِّنَ الْبَدْوِ مِنْۢ بَعْدِ أَنْ نَّزَغَ الشَّيْطٰنُ بَيْنِيْ وَبَيْنَ إِخْوَتِيْ ۚ إِنَّ رَبِّيْ لَطِيْفٌ لِّمَا يَشَآءُ ۚ إِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿100﴾

कि पिताजी! यह मेरे पहले ख़्वाब की तावीर है, मेरे रब ने उसे पूरा कर दिखाया, उस ने मेरे साथ बड़ा एहसान किया जबकि मुझे जेल से निकाला और आप लोगों को रेगिस्तान से ले आया, उस इख़्तेलाफ़ के बाद जो शैतान ने मुझ में और मेरे भाईयों में डाल दिया था, मेरा रब जो चाहे उस के लिए अच्छी व्यवस्था (तदबीर) करने वाला है और बड़ा जानने वाला हिक्मत वाला है।

رَبِّ قَدْ آتَيْتَنِيْ مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِيْ مِنْ تَأْوِيْلِ الْأَحَادِيْثِ ۚ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۟ أَنْتَ وَلِيّٖ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا وَّأَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿101﴾

१०१. हे मेरे रब ! तूने मुझे मुल्क अता किया और मुझे ख़्वाबों की तावीर का इल्म दिया, हे आकाशों और धरती के पैदा करने वाले ! तू ही दुनिया और आख़िरत में मेरा वली और मददगार है, तू मुझे मुसलमान की हालत में मार और नेकी करने वालों में शामिल कर दे ।[1]

ذٰلِكَ مِنْ أَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ إِلَيْكَ ۚ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ أَجْمَعُوْا أَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُوْنَ ﴿102﴾

१०२. यह ग़ैब की ख़बरों में से है जिसकी हम आप की तरफ़ वह्यी कर रहे हैं, और आप उन के पास न थे जबकि उन्होंने अपनी बात ठान ली थी और वे छल और कपट करने लगे थे।

وَمَآ أَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿103﴾

१०३. अगरचे आप लाख चाहें ज़्यादातर लोग ईमान वाले न होंगे।

وَمَا تَسْأَلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿104﴾

१०४. और आप उन से उस पर कोई मज़दूरी नहीं माँग रहे हैं, यह तो सारी दुनिया के लिये नसीहत ही नसीहत है।

अब एहतेराम के तौर पर भी सज्दा किसी को करना नाजायेज़ है।

[1] अल्लाह तआला ने हज़रत यूसुफ़ पर जो एहसान किये उन्हें याद करके और अल्लाह तआला के दूसरे गुणों (सिफ़ात) का बयान करके दुआ कर रहे हैं कि जब मुझे मौत आये तो इस्लाम की हालत में आये और मुझे सज्जन (पुनीत) पुरूषों के साथ मिला दे। इस से मुराद हज़रत यूसुफ़ के बाप-दादा हज़रत इब्राहीम और इसहाक़ आदि हैं, कुछ लोगों को इस दुआ से यह शक पैदा हुआ कि हज़रत यूसुफ़ ने मौत की दुआ की, अगरचे यह मौत की दुआ नहीं है, आख़िरी पल तक इस्लाम पर मज़बूत रहने की दुआ है।

१०५. और आकाशों और धरती में बहुत सी निशानियाँ हैं, जिन से ये मुँह फेर कर निकल जाते हैं।

१०६. और उन में से ज़्यादातर लोग अल्लाह पर ईमान रखने के बावजूद भी मुशरिक ही हैं।[1]

१०७. क्या वे इस बात से बेख़ौफ़ हो गये हैं कि उन के पास अल्लाह के अज़ाबों में से कोई आम अज़ाब आ जाये या उन पर अचानक क़यामत टूट पड़े और वे ग़ाफ़िल हों।

१०८. (आप) कह दीजिये मेरा यही रास्ता है, मैं और मेरे पैरोकार अल्लाह की तरफ़ बुला रहे हैं, पूरे यक़ीन और ऐतमाद के साथ[2] और अल्लाह पाक है और मैं मूर्तिपूजकों (मिश्रणवादियों) में नहीं।

१०९. और आप से पहले हम ने बस्ती वालों में जितने भी रसूल भेजे हैं सब मर्द ही थे, जिन की तरफ़ हम वह्यी (प्रकाशना) उतारते गये[3] क्या धरती पर चल-फिर कर उन्होंने नहीं देखा कि उन से पहले के लोग का कैसा नतीजा हुआ? बेशक आख़िरत का घर परहेज़गारों (तक़्वा बरतने वालों) के लिये बहुत अच्छा है, क्या तुम फिर भी नहीं समझते?

وَكَأَيِّن مِّنْ آيَةٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يَمُرُّونَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُونَ ﴿105﴾

وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُم بِاللَّهِ إِلَّا وَهُم مُّشْرِكُونَ ﴿106﴾

أَفَأَمِنُوا أَن تَأْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ عَذَابِ اللَّهِ أَوْ تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿107﴾

قُلْ هَٰذِهِ سَبِيلِي أَدْعُو إِلَى اللَّهِ ۚ عَلَىٰ بَصِيرَةٍ أَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِي ۖ وَسُبْحَانَ اللَّهِ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿108﴾

وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُّوحِي إِلَيْهِم مِّنْ أَهْلِ الْقُرَىٰ ۗ أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۗ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ اتَّقَوْا ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿109﴾

---

[1] यह वह हक़ीक़त है जिसे क़ुरआन ने कई जगहों पर बड़ी वज़ाहत के साथ बयान किया है कि ये मूर्तिपूजक यह क़ुबूल करते हैं कि आकाश और धरती का ख़ालिक़, मालिक, रब और संचालक (मुंतज़िम) केवल अल्लाह तआला ही है, लेकिन इस के बावजूद इबादत में अल्लाह के साथ दूसरों को भी शामिल कर लेते हैं, और इस तरह ज़्यादातर लोग मुशरिक हैं, यानी हर युग के लोग तौहीद इबादत (पूजा) को मानने के लिये तैयार नहीं होते हैं, आज के क़ब्र पूजने वालों का शिर्क भी यही है कि वह क़ब्रों में गड़े बुज़ुर्गों को इबादत का हक़दार समझकर उन्हें मदद के लिये पुकारते भी हैं और इबादत की कई रीतियाँ भी अपनाते हैं।

[2] यानी यह तौहीद (एकेश्वरवाद) का रास्ता ही मेरा रास्ता है, बल्कि तमाम पैग़म्बरों का यही रास्ता रहा है, इसी की तरफ़ मैं और मेरे पैरोकार मज़बूत ईमान के साथ और दीनी क़ानूनों के सुबूतों के साथ लोगों को बुलाते हैं।

[3] यह आयत इस बात का सुबूत है कि सभी नबी मर्द हुए हैं,औरतों से किसी को भी नबूअत का पद नहीं मिला, इसी तरह उनका सम्बन्ध (तआल्लुक़) नगरों से था, उन में से कोई भी ग्रामीण (ग्रामवासियों) में से न था, क्योंकि ग्रामीण और देहाती नगरवासियों के मुक़ाबिल आम तौर से कठोर और अख़लाक़ में सख़्त होते हैं और नगरवासी उनकी मुक़ाबिल नर्म, आसान और सभ्य (मुहज़्ज़ब) होते हैं और यह ख़ूबियाँ नबूअत के लिये ज़रूरी हैं।

حَتّٰۤی اِذَا اسْتَیْـَٔسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوْۤا اَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوْا جَآءَهُمْ نَصْرُنَا ۙ فَنُجِّیَ مَنْ نَّشَآءُ ؕ وَلَا یُرَدُّ بَاْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِیْنَ ﴿۱۱۰﴾

११०. यहाँ तक कि जब रसूल मायूस होने लगे और उम्मत के लोग यह ख़्याल करने लगे कि उन्हें झूठ कहा गया, फ़ौरन हमारी मदद उन्हें आ पहुँची, जिसे हम ने चाहा उसे नजात अता की, बात यह है कि हमारा अज़ाब गुनहगारों से वापस नहीं किया जाता।

لَقَدْ كَانَ فِیْ قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّاُولِی الْاَلْبَابِ ؕ مَا كَانَ حَدِیْثًا یُّفْتَرٰی وَلٰكِنْ تَصْدِیْقَ الَّذِیْ بَیْنَ یَدَیْهِ وَتَفْصِیْلَ كُلِّ شَیْءٍ وَّهُدًی وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ یُّؤْمِنُوْنَ ﴿۱۱۱﴾

१११. इन की कहानियों में अक़्लमंदों के लिये बिला शुब्हा नसीहत और तंबीह है, यह क़ुरआन झूठ बनायी हुई बातें नहीं, बल्कि यह तसदीक़ है, उन किताबों के लिये जो इस से पहले की हैं, और हर चीज़ का तफ़सीली बयान और हिदायत और रहमत है ईमान वालों के लिये।[1]

सूरतु राअद-१३

سُوْرَةُ الرَّعْدِ

सूरः अल-राअद मदीने में उतरी और इस में तैंतालीस आयतें और छः रुकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

الٓمّٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰیٰتُ الْكِتٰبِ ؕ وَالَّذِیْۤ اُنْزِلَ اِلَیْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یُؤْمِنُوْنَ ﴿۱﴾

१. अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰ रा॰। ये क़ुरआन की आयतें हैं और जो कुछ आप की तरफ़ आप के रब की तरफ़ से उतारा गया है सब सच है, लेकिन ज़्यादातर लोग ईमान नहीं लाते (यक़ीन नहीं करते)।

اَللّٰهُ الَّذِیْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَیْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوٰی عَلَی الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ

२. अल्लाह वह है जिस ने आकाशों को बिना खंभों के ऊंचा कर रखा है कि तुम उसे देख रहे हो, फिर वह अर्श पर क़ायम है[2] उसी ने सूरज

---

[1] यानी यह क़ुरआन जिस में यह यूसुफ़ की कहानी और दूसरी क़ौमों के वाक़ेआत का बयान है, कोई गढ़ा हुआ नही है बल्कि यह पहले की किताबों की तसदीक़ करने वाला और उसमें धर्म के विषयों सभी जरूरी बातों का तफ़सीली बयान है और ईमानवालों के लिये सीधा रास्ता और रहमत है।

[2] "इस्तवा अलल अर्श" का मतलब इस से पहले बयान हो चुका है कि इस से मुराद अल्लाह तआला का अर्श पर स्थिर होना है। मोहद्देसीन (हदीसों के आलिमों) का यही रास्ता है, वह इसका तफ़सीली ख़्याल नहीं करते, जैसे कुछ दूसरे गिरोह इस में और रब के दूसरे अवसाफ़ में कष्ट कल्पना करते हैं।

كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ بِلِقَاۗءِ رَبِّكُمْ تُوْقِنُوْنَ ②

और चाँद को तावे बना रखा है, हर एक मुकर्रर वक़्त तक चल रहा है, वही काम की तदबीर करता है, वह अपनी निशानियाँ खोल-खोल कर बयान कर रहा है कि तुम अपने रब से मिलने का यक़ीन कर लो।

وَهُوَ الَّذِيْ مَدَّ الْاَرْضَ وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْهٰرًا ۭ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ جَعَلَ فِيْهَا زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ③

३. और उसी ने धरती को फैला कर बिछा दिया और उस में पहाड़ और नदियाँ पैदा कर दी हैं, और उस में हर तरह के फलों के जोड़े दोहरे-दोहरे पैदा किये हैं[1] वह रात से दिन को छिपाता है, निश्चय ही ग़ौर व फ़िक्र करने वालों के लिये उस में बहुत-सी निशानियाँ हैं।

وَفِي الْاَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ وَّجَنّٰتٌ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّزَرْعٌ وَّنَخِيْلٌ صِنْوَانٌ وَّغَيْرُ صِنْوَانٍ يُّسْقٰى بِمَاۗءٍ وَّاحِدٍ ۣ وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلٰي بَعْضٍ فِي الْاُكُلِ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ④

४. और धरती में कई तरह के टुकड़े एक-दूसरे से मिले-जुले हैं, और अंगूरों के बाग़ हैं और खेत हैं और खजूरों के पेड़ हैं शाखाओं वाले, और कुछ ऐसे हैं जो शाखाओं वाले नहीं, सब एक ही पानी से सींचे जाते हैं, फिर भी हम एक को एक पर फलों में फ़ज़ीलत देते हैं, इस में अक़्लमंदों के लिये बहुत सी निशानियाँ हैं।

وَاِنْ تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا ءَاِنَّا لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ڛ اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ ۚ وَاُولٰۗىِٕكَ الْاَغْلٰلُ فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ ۚ وَاُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ⑤

५. और अगर तुझे ताज्जुब हो तो हक़ीक़त में उनका यह कहना आश्चर्यजनक (ताज्जुबख़ेज़) है कि क्या जब हम मिट्टी हो जायेंगे तो क्या हम नया जन्म लेंगे, यही वह लोग हैं जिन्होंने अपने रब से कुफ़्र किया, और यही हैं जिनकी गर्दनों में फंदे होंगे, और यही हैं जो नरक में रहने वाले हैं जो उस में हमेशा रहेंगे।

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثُلٰتُ ۭ وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰي ظُلْمِهِمْ ۚ وَاِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيْدُ الْعِقَابِ ⑥

६. और जो तुझ से सज़ा की माँग में जल्दी कर रहे हैं सुख से पहले ही, बेशक उन से पहले (मिसाल के तौर पर) सज़ायें आ चुकी हैं, और बेशक तेरा रब माफ़ करने वाला है, लोगों के बेजा ज़ुल्म पर भी, और यह भी निश्चित बात है कि तेरा रब सख़्त सज़ा देने वाला भी है।

---

[1] इसका एक मतलब यह है कि नर और मादा दोनों बनाये जैसाकि मौजूदा तहक़ीक़ात ने इसकी तसदीक़ कर दी है, दूसरा मतलब (जोड़े-जोड़े का) यह है कि मीठा-खट्टा, ठंड-गर्म, स्याह-सफ़ेद और मज़ेदार और बेमज़ा इसी तरह एक-दूसरे से अलग और विपरीत (मुख़तलिफ़) तरह का पैदा किया।

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ اِنَّمَآ اَنْتَ مُنْذِرٌ وَّلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ﴿7﴾

७. और काफ़िर (कृतघ्न) कहते हैं कि उस पर उस के रब की तरफ़ से कोई निशानी (चमत्कार) क्यों नहीं उतारी गयी? बात यह है कि आप तो केवल बाख़बर करने वाले हैं और हर क़ौम के लिये हिदायत करने वाला है।[1]

اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى وَمَا تَغِيْضُ الْاَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ؕ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ﴿8﴾

८. मादा अपने पेट में जो कुछ रखती है, उसे अल्लाह तआला अच्छी तरह जानता है,[2] और पेट (गर्भाशय) का घटना-बढ़ना भी,[3] हर चीज उसके पास अंदाज़े से है।

عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ ﴿9﴾

९. छिपी और खुली बातों का वह इल्म रखने वाला है, सब से बड़ा और सब से ऊँचा और सब से अच्छा है।

سَوَآءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ اَسَرَّ الْقَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ بِهٖ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍۢ بِالَّيْلِ وَسَارِبٌۢ بِالنَّهَارِ ﴿10﴾

१०. तुम में से किसी का अपनी बात छुपा कर कहना और ऊँची आवाज में उसे कहना और जो रात को छिपा हो और जो दिन में चल रहा हो, सब अल्लाह पर बराबर हैं।

لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ يَحْفَظُوْنَهٗ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاِذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِقَوْمٍ سُوْٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ ﴿11﴾

११. उस के मुहाफ़िज इंसान के आगे पीछे तैनात हैं, जो अल्लाह के हुक्म से उसकी हिफ़ाज़त करते हैं, किसी क़ौम की हालत अल्लाह (तआला) नहीं बदलता जब तक कि वे ख़ुद न बदलें जो उनके दिल में है। अल्लाह (तआला) जब किसी क़ौम को सज़ा देने का फ़ैसला कर लेता है तो वह बदला नहीं करता, और सिवाय उस के कोई भी उनका संरक्षक (निगहबान) भी नहीं।

[1] यानी हर क़ौम की हिदायत के लिये अल्लाह तआला ने पैग़म्बर अवश्य भेजा है, यह अलग बात है कि क़ौमों ने यह रास्ता अपनाया या नहीं अपनाया, लेकिन सीधा रास्ता दिखाने के लिये संदेशवाहक हर क़ौम के अंदर अवश्य आया।

[2] माता के पेट में क्या है? नर है या मादा, ख़ूबसूरत है या बदसूरत, नेक है या बद, लम्बी उम्र या कम उम्र? सभी बातें केवल अल्लाह तआला ही जानता है।

[3] इस से मुराद गर्भ की मुद्दत है जो आम तौर से नौ माह होती है, लेकिन घटती और बढ़ती भी है, किसी वक़्त यह दस माह और किसी वक़्त सात-आठ माह हो जाती है, इसका भी इल्म अल्लाह के सिवाय किसी को नहीं।

هُوَ الَّذِيْ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ﴿12﴾

१२. वह अल्लाह ही है जो तुम्हें बिजली की चमक डराने और उम्मीद दिलाने के लिये दिखाता है और भारी बादलों को पैदा करता है।[1]

وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ خِيْفَتِهٖ ۚ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيْبُ بِهَا مَنْ يَّشَآءُ وَهُمْ يُجَادِلُوْنَ فِي اللّٰهِ ۚ وَهُوَ شَدِيْدُ الْمِحَالِ ﴿13﴾

१३. और गर्ज उसकी तारीफ़ और महिमा (तस्बीह) बयान करती है और फ़रिश्ते भी उस के डर से, वही आकाश से बिजली गिराता है और जिस पर चाहता है उस पर डालता है। काफ़िर अल्लाह के बारे में लड़-झगड़ रहे हैं और अल्लाह सख़्त ताक़त वाला है।

لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ ؕ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَجِيْبُوْنَ لَهُمْ بِشَيْءٍ اِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ اِلَى الْمَآءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهٖ ؕ وَمَا دُعَآءُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ﴿14﴾

१४. उसी को पुकारना सच है, जो लोग दूसरों को उस के अलावा पुकारते हैं वे उनकी किसी पुकार का जवाब नहीं देते, जैसे कोई इंसान अपने हाथ पानी की तरफ़ फैलाये हुए हो कि उस के मुँह में पड़ जाये जबकि वह पानी उस के मुँह में पहुँचने वाला नहीं[2] उन काफ़िरों की जितनी पुकार है सभी गुमराह है।

وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ﴿15﴾ السجدة

१५. और अल्लाह ही के लिये आकाशों और धरती के सभी जीव ख़ुशी और नाख़ुशी से सज्दा करते हैं और उनकी छाया भी सुबह और शाम।

قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ ؕ قُلْ اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ لَا يَمْلِكُوْنَ

१६. (आप) पूछिये कि आकाशों और धरती का रब कौन है? कह दीजिये अल्लाह। कह दीजिये क्यों तुम फिर भी इस के सिवाय दूसरों को मददगार बना रहे हो जो ख़ुद अपनी जान के भी

---

[1] भारी बादलों से मुराद वह बादल जिन में बारिश का पानी होता है।

[2] यानी जो अल्लाह को छोड़ कर दूसरों को मदद के लिये पुकारते हैं, उनकी मिसाल ऐसी है जैसे कोई इंसान दूर से पानी की तरफ़ अपनी हथेलियाँ फैलाकर पानी से कहे कि तू मेरे मुँह तक आ जा, ज़ाहिर है कि पानी न चलने वाला है, उसे पता नहीं कि हथेलियाँ फैलाने वाले की ज़रूरत क्या है? और न उसे यह पता है कि वह मुझे अपने मुँह तक पहुँचने की माँग कर रहा है। और न उस में यह ताक़त है कि अपनी जगह से चलकर उसके हाथ या मुँह तक पहुँच जाये। इसी तरह ये मूर्तिपूजक अल्लाह के सिवाय जिनको पुकारते हैं, उन्हें न यह पता है कि कोई उन्हें पुकार रहा है और उसकी अमुक (फ़लाँ) ज़रूरत है, और न उस ज़रूरत को पूरा करने की उन में ताक़त ही है।

لِاَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۙ اَمْ هَلْ تَسْتَوِى الظُّلُمٰتُ وَالنُّوْرُ ۚ اَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ خَلَقُوْا كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَىْءٍ وَّهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ⑯

भले-बुरे का हक़ नहीं रखते, कह दीजिये क्या अंधा और आँखों वाला बराबर हो सकता है? या क्या अँधेरा और उजाला बराबर हो सकता है?[1] क्या जिन्हें ये अल्लाह का साझीदार बना रहे हैं उन्होंने भी अल्लाह की तरह पैदा की है कि उनके देखने में पैदाईश संदिग्ध (मुतशाबिह) हो गई? कह दीजिये कि केवल अल्लाह ही सभी चीज़ों का पैदा करने वाला है वह अकेला है और ज़बरदस्त ग़ालिब है।

اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتْ اَوْدِيَةٌۢ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَّابِيًا ؕ وَمِمَّا يُوْقِدُوْنَ عَلَيْهِ فِى النَّارِ ابْتِغَآءَ حِلْيَةٍ اَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِّثْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ۬ؕ فَاَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَآءً ۚ وَاَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِى الْاَرْضِ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ ⑰

१७. उसी ने आकाश से वर्षा की फिर अपनी अपनी शक्ति अनुसार नाले वह निकले, फिर पानी के धारे ने ऊपर चढ़कर झाग को उठा लिया, और उस चीज़ में भी जिसको आग में डाल कर तपाते हैं ज़ेवर या सामान के लिये उसी तरह के झाग हैं, इसी तरह अल्लाह तआला सच और झूठ को वाज़ेह करने की मिसाल देता है।[2] अब झाग बेकार होकर चला जाता है, लेकिन जो लोगों को फ़ायेदा पहुँचाने वाली चीज़ें हैं, वह धरती में ठहरी रहती हैं, अल्लाह (तआला) इसी तरह मिसाल दिया करता है।

[1] यानी जिस तरह अंधा और आँख वाला बराबर नहीं हो सकते, उसी तरह एकेश्वरवादी (मुवाहिद) और अनेकश्वरवादी (मुश्रिक) बराबर नहीं हो सकते, इसलिये एक अल्लाह के पुजारी का दिल तौहीद की रोशनी से कामिल है, जबकि दूसरों के पुजारी उस से महरूम हैं, एकेश्वरवादी की आँखें हैं, वह एकेश्वरवाद का नूर देखता है और दूसरों के पुजारी को यह एकेश्वरवाद का नूर दिखायी नहीं पड़ता, इसलिये वह अंधा है। इसी तरह जिस तरह अँधेरा और उजाला बराबर नहीं हो सकते। एक अल्लाह का पुजारी जिसका दिल नूर से कामिल है, और एक मूर्तिपूजक (अनेकश्वरवादी) जिहालत और गुमराही के अंधेरों में भटक रहा है, बराबर नहीं हो सकते।

[2] यानी जब सच और झूठ का आपस में सामना और टकराव होता है तो झूठ को उसी तरह क़रार नहीं मिलता जिस तरह से बाढ़ की धारा का झाग पानी के साथ धातों का झाग, जिनको आग में तपाया जाता है, धातों के साथ बाक़ी नहीं रहता बल्कि ख़त्म और बरबाद हो जाता है।

१८. जिन लोगों ने अपने रब के हुक्मों का पालन किया उन के लिये भलाई है, और जिन लोगों ने उस के हुक्म की पैरवी न की अगर उन के लिये धरती में जो कुछ है सब कुछ हो, और उस के साथ वैसा ही दूसरा भी हो तो वह सब कुछ अपने बदले में दे दें, यही हैं जिन के लिये बुरा हिसाव है, और उनका ठिकाना नरक है जो बहुत बुरी जगह है।

لِلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنٰى ؕ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهٗ لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْحِسَابِ ۙ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمِهَادُ (18)

१९. क्या वह इंसान जो यह इल्म रखता हो कि जो आप की तरफ़ आप के रब की तरफ़ से उतारा गया है वह हक़ है, उस इंसान जैसा हो सकता है जो अंधा हो,[1] नसीहत तो वही क़ुबूल करते हैं जो अक़्लमंद हों।

اَفَمَنْ يَّعْلَمُ اَنَّمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ اَعْمٰى ؕ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ (19)

२०. जो अल्लाह को दिये गये वादे को पूरा करते हैं और वादा नहीं तोड़ते।[2]

الَّذِيْنَ يُوْفُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَلَا يَنْقُضُوْنَ الْمِيْثَاقَ (20)

२१. और अल्लाह (तआला) ने जिन चीजों को जोड़ने का हुक्म दिया है वह उसे जोड़ते हैं, और वे अपने रब से डरते हैं और हिसाब की सख़्ती का डर रखते हैं।

وَالَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ مَاۤ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖۤ اَنْ يُّوْصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُوْنَ سُوْٓءَ الْحِسَابِ (21)

२२. और वे अपने रब की ख़ुशी के लिये सब्र करते हैं, और नमाज़ों को लगातार क़ायम रखते हैं, और जो कुछ हम नें उन्हें दे रखा है उसे खुले और छुपे तौर से ख़र्च करते हैं, और बुराई को भी भलाई से टालते हैं, उन्हीं के लिये आख़िरत का घर है।

وَالَّذِيْنَ صَبَرُوا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً وَّيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ (22)

[1] यानी एक वह इंसान जो क़ुरआन की सच्चाई पर यक़ीन रखता हो और दूसरा अंधा हो, यानी उसे क़ुरआन की सच्चाई पर शक हो, क्या ये दोनों बराबर हो सकते हैं? सवाल नकारात्मक (मंफ़ी) है यानी ये दोनों उसी तरह बराबर नहीं हो सकते जिस तरह झाग और पानी या सोना और तांबा और उसकी मैल-कुचैल बराबर नहीं हो सकते।

[2] इस से मुराद वह आपसी सुलह और वादा हैं जो इंसान आपस में एक-दूसरे से करते हैं या वह जो उन के और उन के रब के बीच हैं।

جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ ﴿23﴾

२३. और हमेशा रहने के बाग़[1] जहाँ ये ख़ुद जायेंगे और उन के बुज़ुर्गों और बीवियों और औलाद में से भी जो नेक काम करने वाले होंगे, उन के क़रीब फ़रिश्ते हर दरवाज़े से आयेंगे।

سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ﴿24﴾

२४. (कहेंगे कि) तुम पर सलामती (शान्ति) हो सब्र के बदले, क्या ही अच्छा बदला है इस आख़िरत के घर का।

وَالَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ﴿25﴾

२५. और जो लोग अल्लाह के वादे को उस की मज़बूती के बाद तोड़ देते हैं और जिन चीज़ों के जोड़ने का अल्लाह का हुक्म है उन्हें तोड़ देते हैं, और धरती में फ़साद फैलाते हैं, उन के लिए लानत है और उन के लिए बुरा घर है।[2]

اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ وَفَرِحُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا فِى الْاٰخِرَةِ اِلَّا مَتَاعٌ ﴿26﴾

२६. अल्लाह (तआला) जिसकी रोज़ी चाहता है बढ़ाता है और घटाता है, ये तो दुनिया के जीवन में मस्त हो गये,[3] अगरचे कि दुनिया आख़िरत के मुक़ाबले में बहुत हक़ीर पूँजी है।[4]

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ اَنَابَ ﴿27﴾

२७. काफ़िर कहते हैं कि उस पर उसके रब की तरफ़ से कोई निशानी (चमत्कार) क्यों उतारी नहीं गयी? जवाब दीजिये कि जिसे अल्लाह भटकाना चाहे भटका देता है और जो उसकी तरफ़ झुके उसे रास्ता दिखा देता है।

[1] अदन का मतलब है हमेशा-हमेशा रहने वाले बाग़।

[2] यह नेकों के साथ बुरों के नतीजे का बयान कर दिया ताकि इंसान इस नतीजा से बचने की कोशिश करे।

[3] किसी को अगर दुनिया का माल ज़्यादा मिल रहा है, जबकि वह अल्लाह का नाफ़रमान है तो यह ख़ुश और बेफ़िक्र होने का मुक़ाम नहीं, क्योंकि यह मौक़ा है, पता नहीं कब यह मुद्दत ख़त्म हो जाये और अल्लाह की पकड़ में जकड़ लिया जाये।

[4] हदीस में आता है कि दुनिया की क़ीमत आख़िरत के मुक़ाबिल इस तरह है जैसे कोई इंसान अपनी उँगली समुद्र में डिबो कर निकाले तो देखे कि समुद्र के पानी के मुक़ाबिल उसकी उँगली में कितना पानी आया?

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَطْمَىِٕنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ ؕ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَىِٕنُّ الْقُلُوْبُ (28)

२८. जो लोग ईमान लाये उन के दिल अल्लाह को याद करने से शान्ति प्राप्त (हासिल) करते हैं, याद रखो कि अल्लाह की याद से ही दिल को शान्ति हासिल होती है।

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ طُوْبٰى لَهُمْ وَحُسْنُ مَاٰبٍ (29)

२९. जो लोग ईमान लाये और जिन्होंने नेकी के काम भी किये उन के लिये खुशहाली है,[1] और सब से अच्छा मक़ाम है।

كَذٰلِكَ اَرْسَلْنٰكَ فِيْٓ اُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَآ اُمَمٌ لِّتَتْلُوَا۠ عَلَيْهِمُ الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُوْنَ بِالرَّحْمٰنِ ؕ قُلْ هُوَ رَبِّيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ مَتَابِ (30)

३०. उसी तरह हम ने आप को उस उम्मत में भेजा है, जिस से पहले बहुत सी उम्मतें गुज़र चुकी हैं कि आप उन्हें हमारी तरफ़ से जो वहयी (प्रकाशना) आप पर उतरी है पढ़कर सुनाईए, यह अल्लाह मेहरबान के नकारने वाले हैं।[2] (आप) कह दीजिये कि मेरा रब तो वही है, उस के सिवाय बेशक कोई भी इबादत के लायक़ नहीं, उसी के ऊपर मेरा भरोसा है और उसी की तरफ़ मेरा रुजूअ है।

وَلَوْ اَنَّ قُرْاٰنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ اَوْ قُطِّعَتْ بِهِ الْاَرْضُ اَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتٰى ؕ بَلْ لِّلّٰهِ الْاَمْرُ جَمِيْعًا ؕ اَفَلَمْ يَايْـَٔسِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيْعًا ؕ وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا تُصِيْبُهُمْ بِمَا صَنَعُوْا قَارِعَةٌ اَوْ تَحُلُّ قَرِيْبًا مِّنْ دَارِهِمْ حَتّٰى يَاْتِيَ وَعْدُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ (31)

३१. और अगर (मान लिया जाये कि) क़ुरआन के ज़रिये पहाड़ चला दिये जाते या धरती टुकड़े-टुकड़े कर दी जाती या मुर्दों से बातें करा दी जातीं (फिर भी वह ईमान न लाते) बात यह है कि सब काम अल्लाह के हाथ में है तो क्या ईमान वालों का इस बात पर दिल नही जमता कि अगर अल्लाह तआला चाहे तो सभी लोगों को हिदायत दे दे। काफ़िर को तो उन के कुफ़्र के बदले हमेशा ही कोई न कोई सख़्त सज़ा पहुँचती रहेगी या उन के मकानों के आसपास उतरती रहेगी, यहाँ तक कि अल्लाह का वादा आ पहुँचे, बेशक अल्लाह तआला वादा तोड़ा नही करता।

---

[1] طوبى के कई मतलब बताये गये हैं। जैसे सवाब, पाक, मोजिज़ा, मुक़ाबिला, जन्नत में ख़ास पेड़ या मुक़र्रर जगह वग़ैरह। मतलब सभी का एक है यानी स्वर्ग में सब से अच्छा मक़ाम और उसकी सुख-सुविधा (नेमतें)।

[2] मक्का के मूर्तिपूजक 'रहमान' (कृपानिधि) लफ़्ज़ से बहुत भड़कते थे, हुदैबिया की सुलह के मौक़ा पर जब बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर्रहीम के कलिमा लिखे गये तो उन्होंने कहा कि 'रहमान' (कृपानिधि) और रहीम (दयालु) क्या है ? हम नहीं जानते। (इब्ने कसीर)

३२. और बेशक आप से पहले के पैग़म्बरों के साथ मज़ाक किया गया था और मैंने भी क़ाफ़िरों को ढील दी थी, फिर उन्हें पकड़ लिया था तो मेरा अज़ाब कैसा रहा?

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَأَمْلَيْتُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ (32)

३३. तो क्या वह अल्लाह जो ख़बर लेने वाला है हर इंसान का उसके किये हुए अमल पर, और उन लोगों ने अल्लाह के साझीदार ठहराये हैं, कह दीजिये ज़रा उनके नाम तो लो, या तुम अल्लाह को वह बातें बताते हो जो वह धरती पर जानता ही नहीं, या केवल ऊपरी-ऊपरी बातें बना रहे हो,[1] बात हक़ीक़त यह है कि कुफ़्र करने वालों के लिए उन के छल भले ही सुझाये गये हैं, और वे सच्चे रास्ते से रोक दिये गये हैं, और जिसे अल्लाह भटका दे उसे रास्ता दिखाने वाला कोई नही।

أَفَمَنْ هُوَ قَائِمٌ عَلَى كُلِّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَاءَ قُلْ سَمُّوْهُمْ أَمْ تُنَبِّئُوْنَهُ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي الْأَرْضِ أَمْ بِظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مَكْرُهُمْ وَصُدُّوْا عَنِ السَّبِيْلِ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ (33)

३४. उन के लिये दुन्यावी ज़िन्दगी में भी दुख है, और आख़िरत (परलोक) का अज़ाब तो बहुत सख़्त है, और उन्हें अल्लाह के ग़ज़ब से बचाने वाला कोई नहीं।

لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَشَقُّ وَمَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ (34)

३५. उस जन्नत की मिसाल जिसका वादा परहेज़गारों को किया गया है यह है कि उस के नीचे नहरें बह रही हैं, उसके फल हमेशा रहने वाले हैं और उस की छाया भी, यह है बदला परहेज़गारों का और काफ़िरों का अंजाम नरक है।

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ أُكُلُهَا دَائِمٌ وَّظِلُّهَا تِلْكَ عُقْبَى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّعُقْبَى الْكٰفِرِيْنَ النَّارُ (35)

३६. और जिन्हें हम ने किताब अता की है वे तो जो कुछ आप पर उतारा जाता है उस से ख़ुश होते हैं, और दूसरे सम्प्रदाय (फ़िरके) उस की कुछ बातों को क़ुबूल नहीं करते हैं, आप एलान कर दीजिये कि मुझे तो केवल यही हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह की इबादत करूँ और

وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَفْرَحُوْنَ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمِنَ الْأَحْزَابِ مَنْ يُّنْكِرُ بَعْضَهُ قُلْ إِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللّٰهَ وَلَا أُشْرِكَ بِهِ إِلَيْهِ أَدْعُوْا وَإِلَيْهِ مَاٰبِ (36)

---

[1] यहाँ ظاهر (ज़ाहिर) कल्पना के मतलब में है, यानी यह केवल उनकी ख़्याली बातें हैं। मतलब यह है कि तुम इन मूर्तियों की पूजा इस ख़्याल से करते हो कि ये लाभ-हानि पहुँचा सकती हैं और तुम ने उन के नाम भी देवता रखे हुए हैं। अगरचे ये नाम तुम्हारे और तुम्हारे बुज़ुर्गों के रखे हुए हैं, जिनका कोई सुबूत अल्लाह ने नाज़िल नहीं किया, ये केवल ख़्याल और मनमानी करते हैं। (सूर: अल-नज्म-२३)

उस के साथ साझीदार न बनाऊँ, मैं उसी की तरफ़ दावत दे रहा हूँ और उसी की तरफ़ मेरा ठिकाना होना है।

३७. और इसी तरह हम ने इस क़ुरआन को अरबी भाषा का फ़रमान उतारा है,[1] और अगर आप ने उनकी इच्छाओं (ख़्वाहिशों) की पैरवी की इसके बावजूद कि आप के पास इल्म आ चुका है तो अल्लाह (के अज़ाबों) से आप का न हिमायती मिलेगा और न हिफ़ाज़त करने वाला।[2]

وَكَذٰلِكَ أَنزَلْنٰهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا ۚ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ أَهْوَآءَهُم بَعْدَ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا وَاقٍ ﴿37﴾

३८. और हम आप से पहले भी बहुत से रसूल भेज चुके हैं और हम ने उन सब को बीवी और औलाद वाला बनाया था, किसी रसूल से नहीं हो सकता कि कोई निशानी बिना अल्लाह की मर्ज़ी के ले आये, हर मुक़र्रर वादे की एक किताब है।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّن قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ أَزْوٰجًا وَذُرِّيَّةً ۚ وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَن يَأْتِيَ بِـَٔايَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللّٰهِ ۗ لِكُلِّ أَجَلٍ كِتَابٌ ﴿38﴾

३९. अल्लाह जो चाहे मिटा दे और जो चाहे महफ़ूज़ रखे, सुरक्षित किताब (लौहे महफ़ूज़) उसी के पास है।[3]

يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَيُثْبِتُ ۖ وَعِندَهُۥٓ أُمُّ الْكِتٰبِ ﴿39﴾

४०. और उन से किये हुए वादों में से कोई अगर हम आप को दिखा दें या आप को हम मौत दे दें, तो आप पर केवल पहुँचा देना ही है, हिसाब तो हमें लेना है।

وَإِن مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ ﴿40﴾

---

[1] यानी जिस तरह से आप के पहले के रसूलों पर भी स्थानीय भाषा (मक़ामी ज़बान) में किताबें नाज़िल की गयी उसी तरह आप पर क़ुरआन हम ने अरबी भाषा में उतारा है, इसलिए कि आप के पहले सम्बोधित (मुख़ातब) अरबी लोग हैं, जो केवल अरबी भाषा ही जानते हैं, अगर यह क़ुरआन किसी दूसरी भाषा में नाज़िल होता तो यह इनकी समझ से ऊपर होता और हिदायत हासिल करने में इन के लिये बहाना हो जाता, हम नें क़ुरआन को अरबी भाषा में नाज़िल करके यह बहाना भी दूर कर दिया।

[2] यह हक़ीक़त में मुसलमानों के दीनी इल्म रखने वालों को तंबीह है कि वे संसार के वक़्ती लाभ के लिये क़ुरआन और हदीस के साफ़ फ़रमान की तुलना में लोगों की ख़्वाहिशों के पीछे न लगें, अगर वह ऐसा करेंगे तो उन्हें अल्लाह के अज़ाब से बचाने वाला कोई नहीं होगा।

[3] इसका एक मतलब तो यह है कि वह जिस आदेश को चाहे मिटा दे और जिसे चाहे बाक़ी रखे। दूसरा मतलब यह कि उस ने जो तक़दीर में लिख रखा है उस में वह बदलता रहता है, उस के पास लौहे महफ़ूज़ है जिसकी तसदीक़ कुछ हदीसों से होती है।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا ۚ وَاللَّهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهِ ۚ وَهُوَ سَرِيعُ الْحِسَابِ (41)

४१. क्या वे नहीं देखते कि हम धरती को उस के किनारों से घटाते चले आ रहे हैं ? अल्लाह हुक्म करता है और कोई उस के हुक्म को पीछे डालने वाला नहीं, वह जल्द हिसाब लेने वाला है।

وَقَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلِلَّهِ الْمَكْرُ جَمِيعًا ۖ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ۗ وَسَيَعْلَمُ الْكُفَّارُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ (42)

४२. और उन से पहले के लोगों ने भी अपने छल-कपट में कमी न की थी लेकिन सभी व्यवस्था (तदबीर) अल्लाह ही की हैं, जो इंसान कुछ कर रहा है अल्लाह के इल्म में है, काफ़िरों को अभी मालूम हो जायेगा कि उस लोक (आख़िरत) का बदला किस के लिये है।

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَسْتَ مُرْسَلًا ۚ قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَمَنْ عِنْدَهُ عِلْمُ الْكِتَابِ (43)

४३.और यह काफ़िर कहते हैं कि आप अल्लाह के रसूल नहीं। (आप) जवाब दीजिये कि मुझ में और तुममें अल्लाह गवाही देने वाला काफ़ी है, और वह जिसके पास किताब का इल्म है।[1]

سُورَةُ إِبْرَاهِيمَ

सूरतु इब्राहीम-१४

सूरः इब्राहीम मक्का में उतरी और इसकी बावन आयतें हैं और सात रुकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

الر ۚ كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ بِإِذْنِ رَبِّهِمْ إِلَىٰ صِرَاطِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ (1)

१. अलिफ़॰लाम॰रा॰, यह (सब से अच्छी) किताब हम ने आप की तरफ़ उतारी है कि आप लोगों को अंधेरे से उजाले की तरफ़ लायें उन के रब के हुक्म से, ज़बरदस्त तारीफ़ वाले अल्लाह के रास्ते की तरफ़।

[1] किताब से मुराद हक़ीक़ी किताब है, और मुराद तौरात और इंजील का इल्म है, यानी अहले किताब में वे लोग जो मुसलमान हो गये हैं, जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम, सलमान फ़ारसी और तमीम दारी वग़ैरह। यानी यह भी जानते हैं कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ, अरब के मूर्तिपूजक ख़ास मसलों में अहले किताब से सवाल करते और उन से पूछते थे, अल्लाह तआला ने उनको हिदायत अता किया कि अहले किताब जानते हैं, उन से तुम पूछ लो। कुछ आलिम कहते हैं कि किताब से मुराद क़ुरआन है और किताब का इल्म रखने वाले मुसलमान हैं, और कुछ आलिमों ने किताब से मुराद लौहे महफ़ूज़ (सुरक्षित पुस्तक) लिया है।

२. जिस अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों और धरती में है, और काफिरों (नाशुक्रों) के लिये सख़्त अजाब की मुसीबत है।

اللّٰهِ الَّذِیْ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ؕ وَوَیْلٌ لِّلْكٰفِرِیْنَ مِنْ عَذَابٍ شَدِیْدِ ۟ۙ (2)

३. जो आख़िरत (परलोक) के मुक़ाबले में दुनियावी जिन्दगी का मोह करते हैं और अल्लाह की राह से रोकते हैं और उस में टेढ़ापन पैदा करना चाहते हैं, यही लोग परले दर्जे की गुमराही में हैं।

الَّذِیْنَ یَسْتَحِبُّوْنَ الْحَیٰوةَ الدُّنْیَا عَلَی الْاٰخِرَةِ وَیَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِیْلِ اللّٰهِ وَیَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ؕ اُولٰٓىِٕكَ فِیْ ضَلٰلٍۭ بَعِیْدٍ (3)

४. और हम ने हर नबी (संदेशवाहक) को उसकी क़ौमी (राष्ट्रीय) भाषा में ही भेजा है ताकि उन के सामने वाजेह तौर से बयान कर दे, अब अल्लाह जिसे चाहे भटका दे, और जिसे चाहे रास्ता दिखा दे, वह जबरदस्त और हिक्मत वाला है।

وَمَاۤ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهٖ لِیُبَیِّنَ لَهُمْ ؕ فَیُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ یَّشَآءُ وَیَهْدِیْ مَنْ یَّشَآءُ ؕ وَهُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ (4)

५. (याद करो जब कि) हम ने मूसा को अपनी निशानियाँ देकर भेजा कि तू अपनी क़ौम को अंधेरे से उजाले में निकाल, और उन्हें अल्लाह के उपकार (एहसान) याद दिला,[1] इस में निशानियाँ हैं हर सब्र करने वाले के लिये।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰی بِاٰیٰتِنَاۤ اَنْ اَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَی النُّوْرِ ۙ۬ وَذَكِّرْهُمْ بِاَیّٰىمِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ (5)

६. और जिस वक़्त मूसा ने अपनी क़ौम से कहा की अल्लाह के वे नेमत याद करो जो उस ने तुम पर की हैं, जबकि उसने तुम्हें फ़िरऔन के साथियों से आजाद किया जो तुम्हें बहुत दुख पहुँचाते थे, तुम्हारे बेटों को क़त्ल करते थे और तुम्हारी बेटियों को जिन्दा छोड़ते थे, इस में तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम पर बहुत बड़ी आजमाइश थी।

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰی لِقَوْمِهِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَیْكُمْ اِذْ اَنْجٰىكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ یَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ وَیُذَبِّحُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَیَسْتَحْیُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَفِیْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِیْمٌ ۟ (6)

७. और जब तुम्हारे रब ने तुम्हें आगाह कर दिया कि अगर तुम शुक्रिया अदा करोगे तो बेशक मैं तुम्हें ज़्यादा अता करूँगा, और अगर तुम नाशुक्रे होगे तो निश्चय मेरा सख़्त अजाब है।

وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكُمْ لَىِٕنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِیْدَنَّكُمْ وَلَىِٕنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِیْ لَشَدِیْدٌ (7)

---

[1] ایام اللہ से मुराद अल्लाह के वे उपकार (एहसान) हैं जो इस्राईल की औलाद पर किये गये, जिनका तफ़सीली बयान पहले कई बार आ चुका है। या ایام وقائع घटनाओं के माने में है यानि वे घटनायें उन को याद दिला जिन से ये गुजर चुके हैं, जिन में अल्लाह तआला के ख़ास एहसान हुए जिन में से कुछ का बयान यहाँ पर आ रहा है।

وَقَالَ مُوسَىٰٓ إِن تَكْفُرُوٓا۟ أَنتُمْ وَمَن فِى
ٱلْأَرْضِ جَمِيعًا فَإِنَّ ٱللَّهَ لَغَنِىٌّ حَمِيدٌ ⑧

८. और मूसा ने कहा कि अगर तुम सब और धरती पर रहने वाले सभी लोग अल्लाह की नाशुक्री करें तो भी अल्लाह महान (बेनियाज़) और तारीफ़ वाला है।

أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَؤُا۟ ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوحٍ
وَعَادٍ وَثَمُودَ ۛ وَٱلَّذِينَ مِنۢ بَعْدِهِمْ ۛ
لَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا ٱللَّهُ ۚ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُم
بِٱلْبَيِّنَٰتِ فَرَدُّوٓا۟ أَيْدِيَهُمْ فِىٓ أَفْوَٰهِهِمْ وَقَالُوٓا۟
إِنَّا كَفَرْنَا بِمَآ أُرْسِلْتُم بِهِۦ وَإِنَّا لَفِى شَكٍّ
مِّمَّا تَدْعُونَنَآ إِلَيْهِ مُرِيبٍ ⑨

९. क्या तुम्हारे पास तुम्हारे पहले के लोगों की ख़बर नहीं आई? यानी नूह की क़ौम की और आद और समूद की, और उन के बाद वालों की जिन्हें अल्लाह के सिवाय दूसरा कोई नहीं जानता उन के पास उन के रसूल मोजिज़े (चमत्कार) लाये, लेकिन वे अपने हाथ अपने मुंह में फेर ले गये[1] और वाज़ेह तौर से कह दिया कि जो कुछ तुम्हें देकर भेजा गया है हम उसे नही मानते हैं, और जिस चीज़ की तरफ़ तुम हमें दावत दे रहे हो हमें तो उस में बहुत बड़ा शक है (हमें यक़ीन नहीं)।

قَالَتْ رُسُلُهُمْ أَفِى ٱللَّهِ شَكٌّ فَاطِرِ ٱلسَّمَٰوَٰتِ
وَٱلْأَرْضِ ۖ يَدْعُوكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمْ
وَيُؤَخِّرَكُمْ إِلَىٰٓ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ قَالُوٓا۟ إِنْ أَنتُمْ
إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا تُرِيدُونَ أَن تَصُدُّونَا
عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ ءَابَآؤُنَا فَأْتُونَا بِسُلْطَٰنٍ
مُّبِينٍ ⑩

१०. उन के रसूलों ने उन से कहा कि क्या अल्लाह (जो सच है) उस के बारे में शक है जो आकाशों और धरती का पैदा करने वाला है, वह तो तुम्हें इसलिये बुला रहा है ताकि वह तुम्हारे सारे गुनाह माफ़ कर दे, और एक मुकर्रर वक़्त तक तुम्हें मौक़ा अता करे, उन्होंने कहा कि तुम तो हम जैसे ही इंसान हो, तुम चाहते हो कि हम को उन देवताओं की पूजा से रोक दो जिनकी पूजा हमारे बुज़ुर्ग करते रहे, अच्छा तो कोई हमारे सामने वाज़ेह दलील पेश करो।[2]

---

[1] मुफ़स्सिरों ने इस के कई मानों का ज़िक्र किया है। १- जैसे उन्होंने अपने हाथ अपने मुंह में रख लिये और कहा कि हमारा तो केवल एक ही जवाब है कि हम तुम्हारी रिसालत को क़ुबूल नही करते हैं। २- उन्होंने अपनी उंगलियों से अपने मुंह की तरफ़ इशारा कर के कहा कि होशियार रहो और ये जो पैग़ाम लेकर आये हैं उन की तरफ़ रुजूअ न करो। ३- उन्होंने अपने हाथ मुंह पर मज़ाक़ और ताज्जुब से रख लिये, जिस तरह से एक इंसान हंसी दबाने के लिये ऐसा करता है। ४- उन्होंने अपने हाथ रसूलों के मुंह पर रख कर कहा चुप रहो। ५- ग़ुस्सा और जलन के सबब अपने हाथ अपने मुंह में ले लिये।

[2] निशानियां और मोजिज़े हर नबी के साथ होते थे, इस से मुराद ऐसी दलील और मोजिज़ा है,

११. उन के पैग़म्बरों ने उन से कहा कि यह तो सच है कि हम तुम जैसे इंसान हैं, लेकिन अल्लाह (तआला) अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है अपनी कृपा करता है,[1] अल्लाह के हुक्म के बिना हमारी ताक़त नहीं कि हम कोई मोजिज़ा तुम्हें ला दिखायें, और ईमानवालों को केवल अल्लाह (तआला) पर भरोसा रखना चाहिये।

قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ إِنْ نَّحْنُ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلَٰكِنَّ اللّٰهَ يَمُنُّ عَلَىٰ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَمَا كَانَ لَنَآ أَنْ نَّأْتِيَكُمْ بِسُلْطٰنٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿11﴾

१२. और आख़िरकार क्या सबब है कि हम अल्लाह (तआला) पर भरोसा न रखें, जबकि उसी ने हमें हमारा रास्ता दिखाया है, और जो दुख तुम हमें दोगे हम उन पर यक़ीनन सब्र ही करेंगे, भरोसा रखने वालों को यही मुनासिब है कि अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिये।

وَمَا لَنَآ أَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنَا سُبُلَنَا ؕ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلٰى مَآ اٰذَيْتُمُوْنَا ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿12﴾

१३. और काफ़िरों ने अपने रसूलों से कहा कि हम तुम्हें देश से निकाल देंगे या तुम फिर से हमारे धर्म में लौट आओ, तो उन के रब ने उनकी ओर वह्यी (प्रकाशना) भेजी कि हम उन ज़ालिमों का ही नाश कर देंगे।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ أَرْضِنَآ أَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ؕ فَأَوْحٰىٓ إِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿13﴾

१४. और उस के बाद हम ख़ुद तुम्हें धरती पर बसायेंगे, यह है उन के लिये जो मेरे सामने खड़े होने से डर रखें और मेरी चेतावनी (तंबीह) से डरते रहें।

وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِهِمْ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِيْ وَخَافَ وَعِيْدِ ﴿14﴾

१५. और उन्होंने निर्णय (फ़ैसला) माँगा, और सभी सरकश अड़ियल लोग नाकाम हो गये।

وَاسْتَفْتَحُوْا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ﴿15﴾

१६. उसके सामने नरक है जहाँ उन्हें पीप का पानी पिलाया जायेगा।[2]

مِّنْ وَّرَآئِهٖ جَهَنَّمُ وَيُسْقٰى مِنْ مَّآءٍ صَدِيْدٍ ﴿16﴾

जिसे देखने की उनकी इच्छा होती थी, जैसे मक्का के मूर्तिपूजकों ने रसूलुल्लाह ﷺ से कई तरह के मोजिज़े दिखाने की माँग की थी, जिसका बयान सूर: बनी इस्राईल में आयेगा।

[1] रसूलों ने पहले संदेहों का जवाब दिया कि बेशक हम तुम जैसे इंसान ही हैं, लेकिन तुम्हारा यह समझना ग़लत है कि इंसान रसूल नहीं हो सकता। अल्लाह तआला इंसानों की हिदायत के लिये इंसानों में से ही कुछ इंसानों को वह्यी (प्रकाशना) और रिसालत के लिये चुन लेता है और तुम सभी में से यह उपकार (इन्आम) अल्लाह ने हम पर किया है।

[2] صَدِيْدٌ पीप या वह ख़ून है जो नरक में जाने वालों के गोश्त और खालों से बहा होगा। कुछ

يَتَجَرَّعُهُ وَلَا يَكَادُ يُسِيغُهُ وَيَأْتِيهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ۖ وَمِنْ وَرَائِهِ عَذَابٌ غَلِيظٌ ﴿17﴾

१७. जिसे तक्लीफ़ से घूँट-घूँट पियेगा, फिर भी उसे गले से उतार न सकेगा और उसे हर जगह से मौत आती दिखायी देगी, लेकिन वह मरने वाला नहीं, फिर उस के पीछे सख़्त अज़ाब है।

مَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ ۖ أَعْمَالُهُمْ كَرَمَادٍ اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيحُ فِي يَوْمٍ عَاصِفٍ ۖ لَا يَقْدِرُونَ مِمَّا كَسَبُوا عَلَىٰ شَيْءٍ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الضَّلَالُ الْبَعِيدُ ﴿18﴾

१८. उन लोगों की मिसाल जिन्होंने अपने रब से कुफ़्र किया उन के आमाल (कर्म) उस राख की तरह हैं जिस पर तेज़ हवा आँधी वाले दिन चले, जो भी उन्होंने किया उस में से किसी चीज़ पर समर्थ (क़ादिर) न होंगे, यही दूर का भटकाव है।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ إِنْ يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ﴿19﴾

१९. क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह तआला ने आकाशों को और धरती को सर्वश्रेष्ठ प्रबन्ध (तदबीर) से पैदा किया है, अगर वह चाहे तो तुम सब को तबाह कर दे और नई सृष्टि (मख़लूक़) ले आये।

وَمَا ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ﴿20﴾

२०. और अल्लाह पर यह काम कुछ भी कठिन नहीं।

وَبَرَزُوا لِلَّهِ جَمِيعًا فَقَالَ الضُّعَفَاءُ لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ أَنْتُمْ مُغْنُونَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ۚ قَالُوا لَوْ هَدَانَا اللَّهُ لَهَدَيْنَاكُمْ ۖ سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَجَزِعْنَا أَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَحِيصٍ ﴿21﴾

२१. और सब के सब अल्लाह के सामने खड़े होंगे,[1] उस वक़्त कमज़ोर लोग घमन्ड वालों से कहेंगे कि हम तो तुम्हारे ताबेदार थे तो क्या तुम अल्लाह के अज़ाबों से कुछ अज़ाब हम से दूर कर सकने वाले हो, वे जवाब देंगे कि अगर अल्लाह हमें हिदायत देता तो हम भी तुम्हें हिदायत देते, अब तो हम पर बेक़रारी और

हदीसों में इसे «عُصَارَةُ أهلِ النَّارِ» (मुसनद अहमद हिस्सा ५, पेज १७१) (नरकवासियों के शरीर से निचोड़ा हुआ) और कुछ हदीसों में है कि यह इतना गर्म और उबलता हुआ होगा कि उन के मुँह के निकट पहुँचते ही उन के चेहरे की खाल झुलस कर गिर पड़ेगी और एक घूँट पीते ही पेट की आँतें पाख़ाना के रास्ते से निकल पड़ेंगी। أعاذنا الله منه

[1] यानी सभी महशर के मैदान (फ़ैसले वाले दिन जहाँ सभी जमा होंगे) में अल्लाह के सामने होंगे, कोई कहीं छिप नही सकेगा।

सब्र रखना दोनों बराबर है, हमारे लिये कोई छुटकारा नहीं।

وَقَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِيَ الْاَمْرُ اِنَّ اللّٰهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُّكُمْ فَاَخْلَفْتُكُمْ ؕ وَمَا كَانَ لِيَ عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّآ اَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِيْ ۚ فَلَا تَلُوْمُوْنِيْ وَلُوْمُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ مَآ اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ ؕ اِنِّيْ كَفَرْتُ بِمَآ اَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ قَبْلُ ؕ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ (22)

२२. और जब काम का फ़ैसला कर दिया जायेगा तो शैतान कहेगा कि अल्लाह ने तो तुम्हें सच वादा दिया था और मैंने तुम को जो वादा दिया उस के ख़िलाफ़ किया, मेरा कोई दबाव तुम पर तो था ही नहीं, हाँ मैंने तुम्हें पुकारा और तुम ने मेरी मान ली, अब तुम मुझ पर इल्ज़ाम न लगाओ, बल्कि ख़ुद अपने आप को धिक्कारो, न मैं तुम्हारी मदद कर सकता और न तुम मेरी फ़रियाद को पहुँचने वाले, मैं तो (शुरू से) मानता ही नहीं कि तुम मुझे इस से पहले अल्लाह (तआला) का साझीदार समझते रहे, बेशक ज़ालिमों के लिये दुखदायी अज़ाब हैं।

وَاُدْخِلَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ؕ تَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ (23)

२३. और जो लोग ईमान लाये और नेकी के काम किये वे उन स्वर्गों (जन्नतों) में दाख़िल किये जायेंगे, जिनके नीचे नहरें बह रही हैं जहाँ वे हमेशा रहेंगे अपने रब के हुक्म से,[1] जहाँ उनका ख़ैर मक़्दम (स्वागत) सलाम ही सलाम से होगा।[2]

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّفَرْعُهَا فِي السَّمَآءِ (24)

२४. क्या आप ने नही देखा कि अल्लाह (तआला) ने पाक बात की मिसाल (उदाहरण) एक पाक (पवित्र) पेड़ जैसा बयान किया जिसकी जड़ मज़बूत है और जिसकी शाखायें आकाश में हैं।

---

[1] यह बुरे लोगों और काफ़िरों के मुक़ाबले में परहेज़गारों और ईमान वालों का बयान है, इनका बयान उन के साथ इसलिये किया गया है कि ताकि लोगों के अन्दर ईमान के काम अपनाने की रूचि और ख़्वाहिश पैदा हो।

[2] यानी आपस में उनका स्वागत एक-दूसरे को सलाम करना होगा, इस के सिवाय फ़रिश्ते भी हर दरवाज़े से दाख़िल करके उन्हें सलाम करेंगे।

تُؤْتِيْٓ اُكُلَهَا كُلَّ حِيْنٍۢ بِاِذْنِ رَبِّهَا ۗ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ (25)

२५. जो अपने रब के हुक्म से हर वक्त अपने फल लाता है[1] और अल्लाह (तआला) लोगों के सामने मिसालों को बयान करता है ताकि वे नसीहत हासिल करें।

وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيْثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيْثَةِ ِۨاجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْاَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ (26)

२६. और ख़बीस बात की तुलना गन्दे पेड़ जैसी है जो धरती के कुछ ही ऊपर से उखाड़ लिया गया, उसे कुछ ठहराव तो है नहीं।[2]

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ وَيُضِلُّ اللّٰهُ الظّٰلِمِيْنَ ۙ وَيَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَاۤءُ (27)

२७. ईमानवालों को अल्लाह (तआला) पक्की बात के साथ क़ायम रखता है, दुनियावी जिन्दगी में भी और आख़िरत में भी। हाँ ज़ालिम इंसानों को अल्लाह (तआला) भटका देता है, और अल्लाह जो चाहे कर डाले।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ بَدَّلُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ كُفْرًا وَّاَحَلُّوْا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ (28)

२८. क्या आप ने उनकी तरफ़ नज़र नहीं डाली, जिन्होंने अल्लाह की नेमत के बदले नाशुक्री ज़ाहिर की और अपनी क़ौम को तबाही के घर में ला उतारा।[3]

جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۗ وَبِئْسَ الْقَرَارُ (29)

२९. यानी नरक में जिस में यह सब जायेंगे जो बुरा ठिकाना है।

---

[1] इसका मतलब यह है कि ईमानवालों की मिसाल उस पेड़ जैसा है जो गर्मी और सर्दी हर मौसम में फल देता है। इसी तरह ईमानवालों के नेकी के काम रात-दिन के हर पल में आकाश की तरफ़ ले जाये जाते हैं, «पाक कलिमा» से इस्लाम या لا إله إلا الله और पाक पेड़ से खजूर का पेड़ मुराद है जैसाकि हदीस से साबित है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल इल्म, बाबुल फ़हम फ़िलइल्म और सहीह मुस्लिम, किताबुल सिफ़तिल कियाम:, बाब मिस्लुल मोमिन मिस्लुल नख़्ल:)

[2] «बुरे वाक्य» से मुराद कुफ़्र और 'बुरे पेड़' से इन्द्रायन का पेड़ मुराद है जिसकी जड़ धरती के ऊपर ही होती है और ज़रा इशारे से उखड़ जाती है, यानी काफ़िर के अमल की कोई क़ीमत नहीं है, न वे आकाश पर जाते हैं और न अल्लाह के दरबार में क़ुबूल होते हैं।

[3] इसकी तफ़सीर सहीह बुख़ारी में है कि इस से मुराद मक्का के काफ़िर हैं। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूर: इब्राहीम) जिन्होंने मोहम्मद ﷺ की रिसालत की मुख़ालफ़त करके बद्र की जंग में मुसलमानों से लड़ा कर अपने लोगों को क़त्ल करवा डाला था।

وَجَعَلُوا لِلّٰهِ اَنْدَادًا لِّيُضِلُّوا عَنْ سَبِيْلِهٖ ۭ قُلْ تَمَتَّعُوْا فَاِنَّ مَصِيْرَكُمْ اِلَى النَّارِ ﴿30﴾

३०. और उन्होंने अल्लाह के बराबर बना लिये कि लोगों को अल्लाह के रास्ते से भटकायें। (आप) कह दीजिये कि ठीक है मज़ा उड़ा लो तुम्हारा मुक़ाम तो आख़िर में नरक ही है।

قُلْ لِّعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خِلٰلٌ ﴿31﴾

३१. मेरे ईमान वाले बन्दों से कह दीजिये कि नमाज़ को क़ायम रखें और जो कुछ हम ने उन्हें दे रखा है उस में से कुछ छिपाकर और खुल कर के ख़र्च करते रहें, इस से पहले कि वह दिन आ जाये जिस में न कोई ख़रीदो फ़रोख़्त होगी न दोस्ती और प्रेम।[1]

اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْاَنْهٰرَ ﴿32﴾

३२. अल्लाह वह है जिस ने आकाशों और धरती को पैदा किया है और आकाशों से बारिश कर के उस के ज़रिये तुम्हारी रोज़ी के लिये फल निकाले हैं और नावों को तुम्हारे बस में कर दिया है कि नदियों में उस के हुक्म से चलें फिरें, उसी ने नदियाँ और नहरें तुम्हारे बस में कर दी हैं।

وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَاۗىِٕبَيْنِ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ﴿33﴾

३३. उसी ने तुम्हारे लिये सूरज और चाँद को अधीन (मुसख़्ख़र) कर दिया है कि बराबर ही चल रहे हैं, और रात-दिन को भी तुम्हारे काम में लगा रखा है।[2]

وَاٰتٰىكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ ۭ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ۭ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ ﴿34﴾

३४. और उसी ने तुम्हें तुम्हारी मुँह माँगी सभी चीज़ों में से दे रखा है, अगर तुम अल्लाह की नेमतें गिनना चाहो तो उन्हें पूरा गिन भी नहीं सकते, बेशक इंसान बड़ा ज़ालिम और नाशुक्रा है।

---

[1] नमाज़ क़ायम करने का मतलब है कि उसे अपने वक़्त पर और सुन्नत के मुताबिक और ख़ुशूअ और विनम्र (मुतवज्जेह) होकर अदा किया जाये जिस तरह से नबी ﷺ की "सुन्नत" है। "इंफाक" का मतलब है ज़कात अदा करना, क़रीबी रिश्तेदारों के साथ रहम किया जाये और दूसरे ग़रीबों पर उपकार किया जाये, यह नहीं कि अपनी ज़रूरतों और अपने ऊपर ख़ूब ख़र्च किया जाये और अल्लाह के बतलाये हुए मुक़ामों पर ख़र्च करने से बचा जाये। क़यामत का दिन ऐसा होगा जहाँ न ख़रीद-फ़रोख़्त मुमकिन होगी न कोई दोस्ती ही किसी के काम आयेगी।

[2] रात-दिन उनका आपसी अन्तर (फ़र्क़) जारी रहता है, कभी रात-दिन का कुछ हिस्सा लेकर लम्बी हो जाती है और कभी दिन-रात का कुछ हिस्सा लेकर लम्बा हो जाता है, और यह सिलसिला दुनिया की इब्तेदा से चल रहा है, इस में बाल बराबर अन्तर नहीं आया।

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا الْبَلَدَ اٰمِنًا وَّاجْنُبْنِيْ وَبَنِيَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ ﴿35﴾

३५. (इब्राहीम की यह दुआ भी याद करो) जब इब्राहीम ने कहा हे मेरे रब ! इस नगर को सलामती वाला बना दे,[1] और मुझे और मेरी औलाद को मूर्तिपूजा से महफ़ूज़ रख।

رَبِّ اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ تَبِعَنِيْ فَاِنَّهٗ مِنِّيْ ۚ وَمَنْ عَصَانِيْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿36﴾

३६. हे मेरे रब! उन्होंने बहुत से लोगों को रास्ते से भटका दिया है, अब मेरा पैरोकार मेरा है और जो नाफ़रमानी करे तो तू बहुत ही माफ़ और रहम करने वाला है।

رَبَّنَآ اِنِّيْٓ اَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِيْ بِوَادٍ غَيْرِ ذِيْ زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ ۙ رَبَّنَا لِيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ فَاجْعَلْ اَفْـِٕدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِيْٓ اِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُوْنَ ﴿37﴾

३७. हे मेरे रब ! मैंने अपनी कुछ औलाद इस बंजर जंगल में तेरे पाक घर के क़रीब बसायी है। हे मेरे रब ! यह इसलिये कि वे नमाज़ क़ायम करें[2] इसलिए तू कुछ लोगों के दिलों को उनकी तरफ़ मायेल कर दे, और उन्हें फलों का रिज़्क़ अता कर ताकि ये शुक्रिया अदा करें।

رَبَّنَآ اِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِيْ وَمَا نُعْلِنُ ۗ وَمَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَاۤءِ ﴿38﴾

३८. हे हमारे रब ! तू अच्छी तरह जानता है जो हम छिपायें और जो ज़ाहिर करें, धरती और आकाश की कोई चीज़ अल्लाह से छिपी नहीं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ وَهَبَ لِيْ عَلَى الْكِبَرِ اِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ ۗ اِنَّ رَبِّيْ لَسَمِيْعُ الدُّعَاۤءِ ﴿39﴾

३९. अल्लाह की तारीफ़ है, जिस ने मुझे बुढ़ापे में इस्माईल और इसहाक़ अता (प्रदान) किये, बेशक मेरा रब (अल्लाह) दुआओं का सुनने वाला है।

---

[1] "इस नगर" से मुराद मक्का है, दूसरी दुआओं (प्रार्थनाओं) से पहले यह दुआ की कि इसे सलामती वाला बना दे, इसलिये कि सलामती होगी तो लोग दूसरे उपकारों से भी सही तरीक़े से फ़ायदेमंद हो सकेंगे। वर्ना सलामती के बिना सभी सुख-सुविधाओं (ऐशो-आराम) के बावजूद डर, ख़ौफ़ की छाया इंसान को बेचैन और परीशान रखती है।

[2] इबादतों (आराधनाओं) में से केवल नमाज़ की चर्चा किया, जिस से नमाज़ की अहमियत वाज़ेह होती है।

४०. हे मेरे रब! मुझे नमाज़ का पाबन्द रख और मेरी औलाद को भी[1] हे मेरे रब! मेरी दुआ क़ुबूल कर।

رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ۖ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ ﴿40﴾

४१. हे हमारे रब! मुझे माफ़ी अता कर और मेरे माँ-बाप को भी माफ़ कर दे,[2] और दूसरे ईमानवालों को भी माफ़ कर, जिस दिन हिसाब होने लगे।

رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ﴿41﴾

४२. ज़ालिमों के अमलों से अल्लाह को अन्जान न समझ, वह तो उन्हें उस दिन तक मौक़ा दिये हुए है जिस दिन आँखें फटी रह जायेंगी।

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ۚ اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ ﴿42﴾

४३. वे अपने सिर उठाये दौड़ भाग कर रहे होंगे, ख़ुद अपनी तरफ़ भी उनकी नज़र न लौटेगी और उन के दिल उड़े और गिरे हुए (शून्य) होंगे।

مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ۚ وَاَفْـِٕدَتُهُمْ هَوَآءٌ ﴿43﴾

४४. और लोगों को उस दिन से होशियार कर दे जब कि उन के क़रीब अज़ाब आ जायेगा और ज़ालिम कहेंगे कि हे हमारे रब! हमें बहुत थोड़े क़रीब के वक़्त तक का ही मौक़ा अता कर दे कि हम तेरा निमन्त्रण (दावत) मान लें और तेरे पैग़म्बरों की इत्तेबा में लग जायें, क्या तुम उस से पहले भी क़समें नहीं खा रहे थे कि तुम्हारे लिये दुनिया से टलना ही नहीं।

وَاَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رَبَّنَآ اَخِّرْنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ ۗ اَوَلَمْ تَكُوْنُوْٓا اَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِّنْ زَوَالٍ ﴿44﴾

४५. और क्या तुम उन लोगों के घरों में रहते-सहते न थे जिन्होंने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया, और क्या तुम पर वह मामला खुला नहीं कि हम ने उन के साथ कैसा कुछ किया? हम ने तो

وَّسَكَنْتُمْ فِيْ مَسٰكِنِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْاَمْثَالَ ﴿45﴾

---

[1] अपने साथ अपनी औलाद के लिये भी दुआ माँगी, जैसे इससे पहले भी अपने साथ अपनी औलाद के लिए भी यह दुआ माँगी कि उन्हें पत्थर की मूर्तियों को पूजने से बचा कर रखना। जिससे मालूम हुआ कि अल्लाह के दीन की तरफ़ दावत देने वालों को अपने घर वालों की हिदायत और उनकी दीनी तालीम और तरबियत की तरफ़ से कभी बेफ़िक्र नहीं होना चाहिए।

[2] हज़रत इब्राहीम ने यह दुआ उस वक़्त की जब कि अभी उन पर अपने बाप का अल्लाह का दुश्मन होना मालूम नहीं हुआ था, जब यह वाज़ेह हो गया कि मेरा बाप अल्लाह का दुश्मन है तो उस से अपने को अलग कर लिया, इसलिये कि मूर्तिपूजक के लिये नजात और माफ़ी की दुआ करना जायेज़ नही, चाहे वह कितना ख़ास और नज़दीकी ही क्यों न हो?

तुम्हारे समझाने को बहुत सी मिसालों को बयान कर दिया।

وَقَدْ مَكَرُوْا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللّٰهِ مَكْرُهُمْ ؕ وَاِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُوْلَ مِنْهُ الْجِبَالُ ﴿46﴾

४६. और यह अपने चाल चल रहे हैं और अल्लाह को उन की सभी चालों का इल्म है, उनकी चालें ऐसी न थीं कि उन से पहाड़ अपनी जगह से टल जायें।

فَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ مُخْلِفَ وَعْدِهٖ رُسُلَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿47﴾

४७. आप यह कभी ख़्याल न करें कि अल्लाह अपने नबियों से वादा के ख़िलाफ़ करेगा,[1] अल्लाह बड़ा जबरदस्त और बदला लेने वाला है।

يَوْمَ تُبَدَّلُ الْاَرْضُ غَيْرَ الْاَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿48﴾

४८. जिस दिन धरती इस धरती के अलावा दूसरी ही बदल दी जायेगी और आकाशों को भी, और सभी के सभी एक अल्लाह जबरदस्त के सामने होंगे।

وَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ مُّقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ﴿49﴾

४९. और आप उस दिन मुजरिमों को देखेंगे कि जंजीरों में मिले-जुले एक जगह पर जकड़े होंगे।

سَرَابِيْلُهُمْ مِّنْ قَطِرَانٍ وَّتَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ النَّارُ ﴿50﴾

५०. उन के कपड़े गन्धक के होंगे और आग उन के मुँह पर चढ़ी होगी।

لِيَجْزِيَ اللّٰهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿51﴾

५१. यह इसलिये कि अल्लाह (तआला) हर इंसान को उसके किये हुए अमल का बदला दे, बेशक अल्लाह (तआला) को हिसाब लेते देर नहीं लगेगी।

هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوْا بِهٖ وَلِيَعْلَمُوْا اَنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّلِيَذَّكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿52﴾

५२. यह क़ुरआन[2] सभी लोगों के लिए सूचना पत्र है कि इस के जरिये वे बाख़बर कर दिये जायें और पूरी तरह से मालूम कर लें कि अल्लाह एक ही इबादत के लायक़ है, और ताकि अक़्लमंद लोग सोच समझ लें।

---

[1] यानी अल्लाह ने अपने रसूलों से दुनिया और आख़िरत में मदद करने का जो वादा किया है वह बेशक सच है, उस से वादे की मुख़ालफ़त मुमकिन नहीं।

[2] यह इशारा क़ुरआन की तरफ़ है या पिछले तफ़सीलात की तरफ़ जो «ولا تحسبن الله غافلا» से बयान किया गया है।